नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 373, नई दिल्ली, शुक्रवार 13 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मौन कभी-कभी सबसे गहरा उत्तर होता है, क्योंकि शब्द जहाँ समाप्त हो जाते हैं, वहाँ से समझ की शुरुआत होती है।

02 इन प्राकृतिक उपायों से करें शरीर को डिटॉक्स और निकालें विषैले पदार्थों को बाहर

06 आईएएस बनाम इनोवेशन: क्या हम सिर्फ 'मैनेजर' पैदा कर रहे हैं?

08 भुवनेश्वर-धनबाद और पुरी-पटना दो स्पेशल ट्रेन सर्विस रेगुलर

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च , स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://www.newsparivahan.com/chief-editor/https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

सड़क सुरक्षा | महिला सुरक्षा | प्रदूषण | साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है, तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

टेंपल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) वैष्णवी फाउंडेशन एवं द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सौजन्य से

"पूर्णता निःशुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर
आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय, टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित

पूर्णतः निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

* वैष्णवी फाउंडेशन के सहयोग द्वारा

संजय कुमार बाठला
राष्ट्रीय अध्यक्ष,

1. आंखों की जांच, 2. रक्तचाप, 3. मधुमेह जांच, 4. मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ
5. भारतीय लेंस की सुविधा * द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सहयोग द्वारा
6. बीपी, 7. शुगर, 8. कोलेस्ट्रॉल, 9. हड्डियों का घनत्व,

इस जांच शिविर मे ऊपरलिखित सभी जांच पूरी तरह से निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम् अन्य की निगरानी में जांच,

वैष्णवी फाउंडेशन: 1. डॉ मनोज कुमार दुबे, 2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल चिकित्सक 4. जगदीश

जांच शिविर : दिनांक: 15 मार्च (रविवार) 2026
स्थानः गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली 110027
समय: 10:00 AM to 02:00 PM

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में समय पर पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।
विशेष जानकारी मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर बालाजी हॉस्पिटल लायन्स हॉस्पिटल पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।
स्वस्थ रहें, जागरूक रहें। आपकी सेहत- हमारी प्राथमिकता।

निवेदक :-
संजय कुमार बाठला-राष्ट्रीय अध्यक्ष, पिंकी कुंडू-महासचिव, केके छाबड़ा-उपाध्यक्ष, सुनीता शर्मा-सचिव, अभिषेक राजपूत-सचिव

पिंकी कुंडू
महासचिव

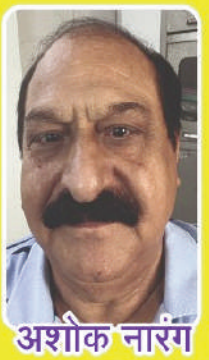
अशोक नारंग
उपाध्यक्ष

के.के. छाबड़ा
उपाध्यक्ष

सुनिता शर्मा
निजि सचिव (महासचिव)

अभिषेक राजपूत
सचिव

जयभगवान
सदस्य

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

लगातार बढ़ रहा है वजन? ये छोटे-छोटे दानें गलाएंगे पेट से चर्बी, जानें अन्य सेहत लाभ

छोटे काले दाने सेहत के लिए बेहद फायदेमंद हैं. इनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड, खासतौर पर अल्फा-लिनोलेनिक एसिड के रूप में मौजूद होते हैं. ये फैटी एसिड शरीर में अच्छे कोलेस्ट्रॉल (एचडीएल) को बढ़ाते हैं और खराब कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) को कम करने में मदद करते हैं. इससे धमनियों में ब्लॉकेज का खतरा कम होता है और हृदय सुरक्षित रहता है.

एक्सपर्ट्स का कहना है कि नियमित रूप से चियासीड्स का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल का स्तर संतुलित रहता है. इससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक जैसी गंभीर बीमारियों का जोखिम काफी हद तक घट जाता है. साथ ही, ये ब्लड प्रेशर को स्थिर रखने में भी सहायक हैं. चियासीड्स में पोटैशियम, मैग्नीशियम और फाइबर भरपूर होता है, जो ब्लड वेसल्स को रिलैक्स करने में मदद करता है. नतीजतन हाई ब्लड प्रेशर की समस्या नियंत्रित रहती है और दिल पर दबाव कम पड़ता है.

ज्यादा नहीं, रोजाना मात्र 1-2 चम्मच चियासीड्स का सेवन करने से दिल की बीमारियों से बचाव संभव है. इनका इस्तेमाल बहुत आसान है. इन्हें रातभर पानी में भिगोकर सुबह खा सकते हैं. दही, सलाद, दलिया, ओट्स या फलों के साथ मिलाकर भी सेवन किया जा सकता है.

पानी में भिगोने पर ये दाने जेल जैसा रूप ले लेते हैं, जो पेट के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है. चियासीड्स में फाइबर, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन और एंटीऑक्सीडेंट्स भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं. ये सभी तत्व शरीर को अंदर से मजबूत और स्वस्थ बनाए रखते हैं. नियमित सेवन से हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है तथा समग्र सेहत में सुधार आता है.

इन प्राकृतिक उपायों से करें शरीर को डिटॉक्स और निकालें विषैले पदार्थों को बाहर

1. अदरक : अदरक में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते है जो मेटाबॉलिज्म को दुरुस्त रखने के साथ ही शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर करने में मदद करते है।

2. लहसुन : लहसुन को एक प्राकृतिक डिटॉक्सिफाइंग एजेंट माना जाता है। इसमें पाए जाने वाले एलिसिन में एंटी वायरल, एंटी बैक्टीरियल, एंटी फंगल और एंटी ऑक्सिडेंट के गुण होते हैं।

3. शहद, नींबू और गर्म पानी : शरीर के विषैले पदार्थों को बाहर करने का ये भी एक असरदार तरीका है। इसके लिए आप रोजाना सुबह शहद और नींबू के साथ गर्म पानी पिएं।

4. फाइबर युक्त चीजे खाएं : अपने खाने में साबुत अनाज, सब्जियां और फलों को शामिल करके भी शरीर से विषैले पदार्थों को करे सकते है।

5. एलोवेरा जूस : इसका नियमित सेवन करने से भी शरीर के जहरीले रसायन बाहर होने में मदद मिलती हैं। इसके लिए रोजना सुबह एलोवेरा का जूस पीया जा सकता है।

गर्मी में पिएं सौंफ का पानी, अंदरूनी ठंडक समेत मिलेंगे ये फायदे, जानें सेवन का तरीका

सौंफ में एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल और दर्द निवारक गुण भरपूर होते हैं. यह पाचन तंत्र को मजबूत बनाती है, गैस, ब्लोटिंग या पेट फूलना, अपच, कब्ज और ऐंठन जैसी समस्याओं को दूर करती है. भोजन के बाद सौंफ चबाने या सौंफ की चाय पीने से पेट की भारीपन और असहजता कम होती है.

गर्मियों में सौंफ का खास फायदा यह है कि यह शरीर से अतिरिक्त गर्मी निकालती है, सूजन कम करती है, थकान दूर करती है और मन को तरोताजा रखती है. नियमित सेवन से वजन नियंत्रण में मदद मिलती है, हार्मोन बैलेंस होता है और त्वचा की चमक बढ़ती है. यह मुंह की बदबू दूर करती है, सांस की तकलीफ में आराम देती है और शरीर से अतिरिक्त पानी निकालने में सहायक होती है.

सौंफ की चाय या शरबत बनाने का तरीका आसान है. इसके लिए 1 चम्मच सौंफ के बीजों को 1 कप पानी में 5-10 मिनट उबालें, छानकर गर्म पीएं. स्वाद के लिए शहद या नींबू मिला सकते हैं. वहीं, शरबत बनाने के लिए सौंफ को पीस लें और पानी में छान लें. स्वाद के लिए चीनी या शहद मिला सकते हैं. खाली पेट सौंफ का सेवन सबसे अच्छा माना जाता है.

क्या खाली पेट दालचीनी खाने से कम हो सकता है कोलेस्ट्रॉल लेवल? आयुर्वेदिक डॉक्टर ने बताई हकीकत

आयुर्वेद में दालचीनी को एक शक्तिशाली औषधि माना गया है.

सही तरीके और सही मात्रा में खाली पेट इसका सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल लेवल कम हो सकता है. यह मसाला केवल स्वाद बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि मेटाबॉलिज्म को दुरुस्त करने और धमनियों की सफाई के लिए भी जाना जाता है. दालचीनी में कई सक्रिय यौगिक और शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होते हैं. आयुर्वेद में इसे कफ और वात नाशक माना गया है. जब खाली पेट इसका सेवन करते हैं, तो यह शरीर में लिपिड मेटाबॉलिज्म को तेज करता है. दालचीनी का नियमित सेवन न केवल बैड कोलेस्ट्रॉल, बल्कि ट्राइग्लिसराइड्स को भी कम करता है.

सुबह खाली पेट दालचीनी का पानी या एक चुटकी दालचीनी पाउडर लेने से कोलेस्ट्रॉल से राहत मिल सकती है. खाली पेट सेवन करने से इसके औषधीय गुण ब्लड स्ट्रीम में जल्दी अवशोषित होते हैं. यह इंसुलिन सेंसिटिविटी को सुधारता है, जो कोलेस्ट्रॉल मैनेजमेंट में मदद करता है. जब शरीर में शुगर लेवल संतुलित रहता है, तो लिवर द्वारा कोलेस्ट्रॉल उत्पादन की प्रक्रिया भी नियंत्रित होती है. इसके अलावा यह धमनियों में जमा फैट को भी धीरे-धीरे कम करने में मदद करता है, जिससे रक्त का संचार सुचारू होता है. इससे हार्ट हेल्थ बेहतर बनी रहती है.

आसानी से वज़न घटाने के लिए खाएं कड़ी पत्ता

1. आपको पता नहीं कड़ी पत्ता खाने से त्वचा, बाल और स्वास्थ्य को कितने फायदे मिलते हैं!

2. कड़ी पत्ता ब्लड-शुगर लेवल को कम करने में सहायता करता है जो मधुमेह रोगियों के लिए भी बहुत फायदेमंद साबित होता है।

3. यहाँ तक लीवर को स्वस्थ रखने के लिए कड़ी पत्ता का जूस पिया जाता है,जो लीवर के लिए लाभकारी होता है।

4. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कड़ी पत्ता से वज़न को भी आसानी से घटाया जा सकता है। इन पत्तों के सेवन से आपके शरीर का जमा फैट निकल जाता है और इसमें जो फाइबर होता है वह शरीर से विषाक्त पदार्थों या टॉक्सिन को निकाल देता है। इसका रेचक (laxative) गुण खाने को जल्दी हजम करवाता है, विशेषकर जब आप बदहजमी महसूस करते हैं।

यूथेनेशिया (Euthanasia) – अर्थ और व्याख्या

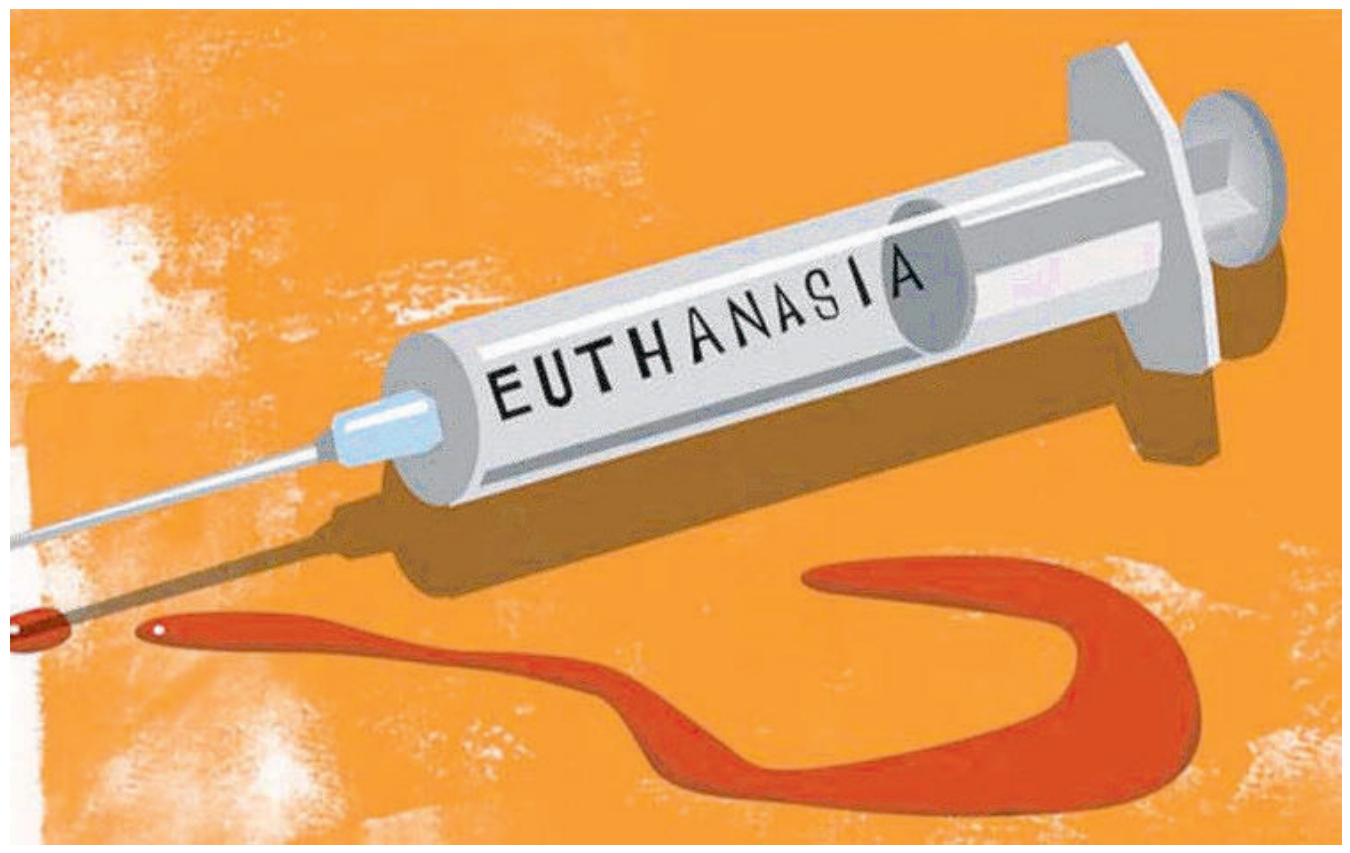

यूथेनेशिया से आशय उस स्थिति से है जब किसी व्यक्ति के जीवन को जानबूझकर समाप्त किया जाता है या उसे प्राकृतिक रूप से समाप्त होने दिया जाता है, ताकि उसे असहनीय पीड़ा, लाइलाज बीमारी या अपरिवर्तनीय चिकित्सीय अवस्था से मुक्ति मिल सके। यह स्थिति सामान्यतः तब सामने आती है जब रोगी अत्यंत कष्ट में हो या स्थायी वनस्पतिक अवस्था (Permanent Vegetative State) में चला गया हो।

"Euthanasia" शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है:

"Eu" = अच्छा / शुभ

"Thanatos" = मृत्यु

अर्थात Euthanasia का शाब्दिक अर्थ है — "शांतिपूर्ण या गरिमापूर्ण मृत्यु।"

चिकित्सकीय परिभाषा (Medical Definition)

चिकित्सा विज्ञान और जैव-नैतिकता (Bioethics) में यूथेनेशिया का अर्थ है —

ऐसा जानबूझकर किया गया कार्य या निर्णय जिसके द्वारा किसी असाध्य अथवा अपरिवर्तनीय रोग से पीड़ित व्यक्ति के जीवन का अंत किया जाए या उसे समाप्त होने दिया जाए, ताकि उसे असहनीय पीड़ा से मुक्ति मिल सके।

यूथेनेशिया के प्रकार

1. सक्रिय यूथेनेशिया (Active Euthanasia)

सक्रिय यूथेनेशिया में डॉक्टर या कोई अन्य व्यक्ति ऐसा प्रत्यक्ष कार्य करता है जिससे रोगी की मृत्यु सीधे हो जाती है।

उदाहरण:

किसी असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति को घातक इंजेक्शन (lethal injection) देना।

कानूनी स्थिति:

भारत में यह अवैध है।

यह केवल कुछ देशों जैसे नीदरलैंड, बेल्जियम और कनाडा में सीमित परिस्थितियों में वैध है।

2. निष्क्रिय यूथेनेशिया (Passive Euthanasia)

निष्क्रिय यूथेनेशिया में जीवन बनाए रखने वाले उपचार (life-support systems) को रोक दिया जाता है या हटा लिया जाता है, जिससे रोगी की मृत्यु स्वाभाविक रूप से हो जाती है।

उदाहरण:

वेंटिलेटर हटाना

कृत्रिम भोजन (Artificial feeding) बंद करना

जीवनरक्षक उपकरणों को हटाना

भारत में स्थिति:

भारत में निष्क्रिय यूथेनेशिया को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित कड़ी शर्तों के अंतर्गत अनुमति दी गई है।

स्वैच्छिक और अस्वैच्छिक यूथेनेशिया

स्वैच्छिक यूथेनेशिया (Voluntary Euthanasia)

जब रोगी स्वयं अपनी इच्छा से यूथेनेशिया की मांग करता है।

अस्वैच्छिक यूथेनेशिया (Non-Voluntary Euthanasia)

जब रोगी अपनी इच्छा व्यक्त करने में असमर्थ होता है, जैसे कि कोमा या स्थायी वनस्पतिक अवस्था में। ऐसी स्थिति में निर्णय परिवार, चिकित्सकों और कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से लिया जाता है।

नैतिक सिद्धांत (Ethical Principle)

यूथेनेशिया के पीछे सबसे महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत है —

"गरिमा के साथ मृत्यु का अधिकार" (Right to Die with Dignity)।

यह विषय चिकित्सा, कानून और दर्शन के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है, जैसे:

रोगी की स्वायत्तता (Patient Autonomy)

असहनीय पीड़ा से मुक्ति

जीवन की पवित्रता (Sanctity of Life)

✓ सरल शब्दों में:

यूथेनेशिया का अर्थ है — किसी असाध्य और अत्यंत कष्टदायक रोग से पीड़ित व्यक्ति को उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए उसके जीवन का अंत करना या उसे स्वाभाविक रूप से समाप्त होने देना, ताकि उसे गरिमापूर्ण मृत्यु प्राप्त हो सके।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 373, नई दिल्ली, शुक्रवार 13 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सच्चाई और न्याय का मार्ग कठिन जरूर होता है, लेकिन अंत में वही मार्ग सम्मान, विश्वास और सच्ची जीत तक पहुँचाता है।"

02 इन प्राकृतिक उपायों से करें शरीर को डिटॉक्स और निकालें विषैले पदार्थों को बाहर
06 आईएएस बनाम इनोवेशन: क्या हम सिर्फ 'मैनेजर' पैदा कर रहे हैं?
08 भुवनेश्वर-धनबाद और पुरी-पटना दो स्पेशल ट्रेन सर्विस रेगुलर

दिल्ली में ई रिक्शा के पंजीकरण में क्या दिक्कत एवं 3 पहिया 6 सवारी इलेक्ट्रिक वाहनों के पंजीकरण में क्यों रोक

दिल्ली में ई रिक्शा पंजीकरण पालिसी के अनुसार ई रिक्शा पंजीकरण कराने से पहले वाहन मालिक और वाहन चालक की चरित्र और निवास की जांच दिल्ली पुलिस द्वारा अनिवार्य है जो कुछ समय पहले तक दिल्ली पुलिस द्वारा परिवहन विभाग के पंजीकरण शाखा के अनुरोध पर दिल्ली पुलिस मुफ्त में करके पंजीकरण शाखा को प्रदान कर देती थी पर पिछले कुछ महीनों से दिल्ली पुलिस उसके लिए परिवहन विभाग की पंजीकरण शाखाओं से भी शुल्क की मांग कर रहा है।

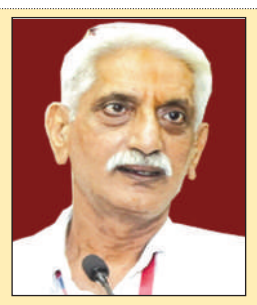

लेखक:- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

पिछले कुछ महीनों से इलेक्ट्रिक वाहनों में दिल्ली में सबसे अधिक पंजीकृत होने वाले ई रिक्शा का पंजीकरण बंद पड़ा है, कौन जिम्मेदार?

दिल्ली परिवहन विभाग की माने तो उनकी तरफ से इलेक्ट्रिक वाहनों के पंजीकरण में कोई रोक नहीं है मुख्यता ई रिक्शा में। फिर भी ई रिक्शा खरीदने वाले ई रिक्शे को पंजीकृत नहीं करवा पा रहे हैं और ना ही दिल्ली में ई रिक्शा बेचने वाले दिल्ली परिवहन विभाग से अधिकृत डीलर।

पंजीकरण में कोई रोक नहीं फिर भी पंजीकरण नहीं, आइए जानते है ऐसा क्यों

1. दिल्ली में ई रिक्शा पंजीकरण पालिसी के अनुसार ई रिक्शा पंजीकरण कराने से पहले वाहन मालिक और वाहन चालक की चरित्र और निवास की जांच दिल्ली पुलिस द्वारा अनिवार्य है जो कुछ समय पहले तक दिल्ली पुलिस द्वारा परिवहन विभाग के पंजीकरण शाखा के अनुरोध पर दिल्ली पुलिस मुफ्त में करके पंजीकरण शाखा को प्रदान कर देती थी पर पिछले कुछ महीनों से दिल्ली पुलिस उसके लिए परिवहन विभाग की पंजीकरण शाखाओं से भी शुल्क की मांग कर रहा है।

*** इस जांच प्रमाण पत्र के लिए परिवहन विभाग जब नए वाहन मालिकों से जब कोई शुल्क नहीं लेती तो दिल्ली पुलिस को कहा से दे, जो बड़ी परेशानी का कारण बना हुआ है।**

(यह जांच प्रमाण पत्र गृह मंत्रालय कमेटी एवं ऊषा मेहरा द्वारा निर्भया कांड के बाद सभी सवारी सार्वजनिक वाहनों के पंजीकरण और सार्वजनिक सवारी वाहन चालकों को लाइसेंस और बेज जारी करने के लिए अनिवार्य किया था और दिल्ली पुलिस की स्पेशल शाखा को यह परिवहन विभाग की पंजीकरण शाखाओं द्वारा मांगे जाने पर निःशुल्क प्रदान करना था)

* अब वाहन मालिकों के चरित्र और निवास प्रमाण का दिल्ली पुलिस द्वारा जांच प्रमाण पत्र नहीं होगा तो ई रिक्शे पंजीकृत कैसे होंगे बड़ा सवाल ?

2. दिल्ली में ई रिक्शा पंजीकरण पालिसी के अनुसार दिल्ली में ई रिक्शा चालक लाइसेंस को जारी करने से पहले उसको परिवहन विभाग द्वारा अधिकृत डीलर से ई रिक्शा चलाने का प्रशिक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त करना अनिवार्य है और परिवहन विभाग द्वारा अधिकृत डीलर द्वारा वह प्रमाणपत्र परिवहन विभाग की आनलाइन वाहन सेवा पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य है।

* दिल्ली में जिस दिन परिवहन विभाग द्वारा डिम्ट्स नाम की कंपनी से इस काम को करवाने की प्रक्रिया बंद की गई उस दिन से आज तक परिवहन विभाग की आनलाइन सेवा में प्रशिक्षण प्रमाणपत्र अपलोड करने का पोर्टल बनाया ही नहीं गया। अब आप बताए और सोचे जब अपलोड करने का पोर्टल परिवहन विभाग द्वारा अधिकृत डीलर के लिए उपलब्ध ही नहीं है तो प्रशिक्षण प्रमाणपत्र अपलोड कैसे और कहा हो?

* पोर्टल की उपलब्धता नहीं और प्रशिक्षण प्रमाणपत्र पालिसी के अनुसार अपलोड अनिवार्य तो ई रिक्शे कैसे पंजीकृत हो।

3. किसी भी व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल सवारी वाहनों के पंजीकरण के लिए वाहन चालक का होना आवश्यक है और वाहन चालक के पास अनिवार्य दस्तावेज (चालक लाइसेंस और बेज) भी होना अति आवश्यक है।

* ऐसे में जब ई रिक्शा के लिए परिवहन विभाग द्वारा प्राप्त चालक लाइसेंस और बेज धारक चालक उपलब्ध नहीं होगे तो कानूनी तरीके से और मोटर वाहन नियमों) अधिनियम के अनुसार ई रिक्शे पंजीकृत कैसे हो सकते हैं?

अब आप समझ गए होंगे की एंटीकरप्शन शाखा द्वारा ई रिक्शा पंजीकरण की जांच शुरू होते ही क्यों दिल्ली में ई रिक्शे पंजीकरण चालू होते हुए भी पंजीकृत नहीं हो पा रहे।

परिवहन विशेष समाचार पत्र का परिवहन विभाग दिल्ली से अनुरोध

1. तत्काल दिल्ली के अंदर पंजीकरण होने वाले ई रिक्शा पालिसी पर पुनः विचार कर ऊपरलिखित समस्याओं के निदान के साथ नई ई रिक्शा पंजीकरण पालिसी जारी करे।

2. जनहित में 3 पहिया 6 सवारी इलेक्ट्रिक वाहनों का पंजीकरण भारत सरकार सड़क परिवहन एवम्‌राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी राजपत्रित अधिसूचना गाइडलाइंस के अनुसार तत्काल आदेश जारी कर शुरू करवाए।

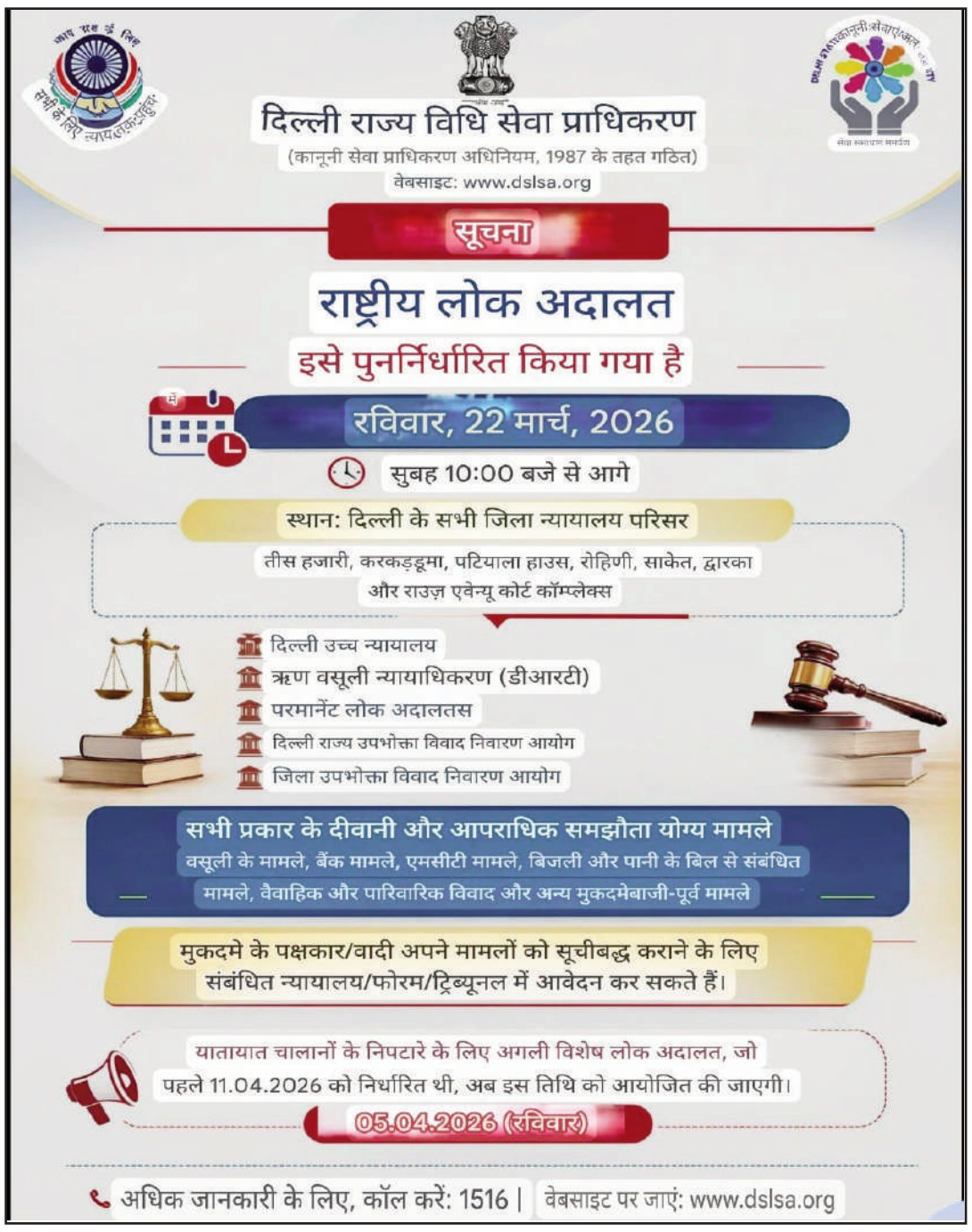

हिसार से इंदौर और दिल्ली के लिए रेल सफर हुआ आसान : कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा

कैबिनेट मंत्री ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को किया रवाना

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) :

क्षेत्र के रेल यात्रियों के लिए वीरवार का दिन खास रहा। हरियाणा के लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने हिसार रेलवे स्टेशन पर गाड़ी संख्या २0957/२0958 इंदौर-नई दिल्ली-इंदौर रेल सेवा को हिसार स्टेशन तक विस्तारित किए जाने के अवसर पर ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि इंदौर-नई दिल्ली-इंदौर रेल सेवा का हिसार तक विस्तार होना क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे हिसार सहित आसपास के जिलों के हजारों यात्रियों को सीधा लाभ मिलेगा और उन्हें अब लंबी दूरी की यात्रा के लिए बेहतर सुविधा प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रदेश में परिवहन सुविधाओं को मजबूत करना और नागरिकों को बेहतर कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना है। कैबिनेट मंत्री ने बताया कि इस रेल सेवा के हिसार तक विस्तार से न केवल यात्रियों का सफर अधिक सुविधाजनक होगा, बल्कि क्षेत्र के व्यापार, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को भी बढ़ावा मिलेगा। इससे हिसार का सीधा संपर्क देश के प्रमुख शहरों से मजबूत होगा और क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी।

उन्होंने बताया कि यह रेल सेवा अब हांसी, महम और रोहतक के नए रूट से संचालित होगी। इस नए रूट से यात्रा में लगने वाले समय में कमी आएगी और यात्रियों को अधिक सुविधाजनक एवं तेज रेल सेवा मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही हैं कि प्रदेश के हर जिले को बेहतर रेल और सड़क सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए हिसार की विधायक सावित्री जिंदल ने कहा कि लंबे समय से क्षेत्र के लोगों की मांग थी कि इंदौर—नई दिल्ली रेल सेवा का विस्तार हिसार तक किया जाए। अब इस रेल सेवा के शुरू होने से हिसार और आसपास के क्षेत्रों के लोगों को काफी सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि इससे यात्रियों को सीधी रेल सेवा उपलब्ध होगी और उन्हें अन्य शहरों के लिए बार-बार ट्रेन बदलने की परेशानी से भी राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि रेल सेवाओं के विस्तार से न केवल यात्रियों को सुविधा मिलती है बल्कि क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास को भी गति मिलती है। हिसार को इस सेवा से निश्चित रूप से बड़ा लाभ मिलेगा। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, महामंत्री आशीष जोशी, कोषाध्यक्ष अशोक मित्तल, डीसीएम बीकानेर भूपेश यादव, डीपीओ बीकानेर शैलेश चौधरी, पूर्व मेयर शकुंतला राजलीवाल, समाजसेवी जगदीश जिंदल, चेयरमैन ब्लॉक समिति हिसार द्वितीय अजय गावड़, ललित शर्मा, सिरसा स्टेशन अधीक्षक पुष्कर सहित प्रशासनिक एवं रेलवे अधिकारी तथा बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक भी उपस्थित रहे।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : बच्चों के लिए प्रस्तावित सोशल मीडिया प्रतिबंध: निषेध से अधिक शिक्षा की आवश्यकता

पिंकी कुंडू

पृष्ठभूमि

बढ़ती चिंताओं जैसे स्क्रीन की लत, साइबर खतरों और हानिकारक ऑनलाइन सामग्री के जवाब में, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्यों ने बच्चों के लिए सोशल मीडिया उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव रखा है। उद्देश्य नाबालिगों को सुरक्षित करना है, लेकिन इस कदम ने भारत के शीर्ष कानूनी विशेषज्ञों के बीच इसकी व्यवहार्यता, वैधता और प्रभावशीलता पर बहस छेड़ दी है।

प्रस्ताव की रूपरेखा

कर्नाटक

– आयु सीमा: 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों को सोशल मीडिया उपयोग से प्रतिबंधित किया जाएगा।

– उद्देश्य: नाबालिगों को साइबर खतरों, हानिकारक सामग्री और स्क्रीन की लत से बचाना।

– दृष्टिकोण: पूर्ण प्रतिबंध; प्रवर्तन तंत्र अभी अस्पष्ट है।

– आलोचना: विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल साक्षरता और जागरूकता कार्यक्रम प्रतिबंधों से अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

आंध्र प्रदेश

– **आयु सीमा:**

o 13 वर्ष से कम आयु के बच्चों पर तत्काल प्रतिबंध।

o परामर्श के बाद इसे 13–16 वर्ष तक बढ़ाने पर विचार।

– समयसीमा: 90 दिनों के भीतर लागू करने की योजना।

– प्रस्तावक: आईटी एवं शिक्षा मंत्री नारा लोकेश, घोषणा मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू द्वारा विधानसभा में।

– तर्क: बच्चों को सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से बचाना, जैसे अनुचित सामग्री का सामना और लत लगना।

कानूनी एवं व्यावहारिक चुनौतियाँ

– अधिकार क्षेत्र का मुद्दा: दूरसंचार और आईटी का नियमन केंद्र सरकार के अधीन है, जिससे राज्यों द्वारा लागू करने की क्षमता पर संदेह।

– **कार्यान्वयन चिंताएँ:**

o प्लेटफॉर्म द्वारा आयु सत्यापन कठिन।

o बच्चे VPN, नकली खाते या साझा उपकरणों के माध्यम से प्रतिबंध को दरकिनार कर सकते हैं।

– विशेषज्ञ राय: पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई और अन्य का सुझाव है कि शिक्षा, जागरूकता और अभिभावकीय मार्गदर्शन विधायी प्रतिबंधों से अधिक टिकाऊ समाधान हैं।

विशेषज्ञों की राय

– उद्देश्य का समर्थन: कानूनी विशेषज्ञों जैसे रंजन गोगोई, मुकुल रोहतगी, ए. एम. सिंघवी, राकेश द्विवेदी और देवदत्त कामत ने प्रस्तावों की अच्छी मंशा को स्वीकार किया।

– कार्यान्वयन पर संदेह: कई विशेषज्ञों ने ऐसे प्रतिबंधों की वैधता और व्यावहारिकता पर सवाल उठाए।

– गोगोई का दृष्टिकोण: उन्होंने निषेध से अधिक शिक्षा पर जोर दिया और बच्चों को सोशल मीडिया का जिम्मेदार उपयोग सिखाने की वकालत की।

मुख्य निष्कर्ष

– कर्नाटक: 16 वर्ष से कम आयु पर प्रतिबंध।

– आंध्र प्रदेश: 13 वर्ष से कम आयु पर प्रतिबंध (90 दिनों में लागू), 16 वर्ष तक विस्तार की संभावना।

– दोनों राज्यों का उद्देश्य बच्चों की सुरक्षा है, लेकिन वे कानूनी अड़चनों और प्रवर्तन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

– विशेषज्ञों की सिफारिश: डिजिटल साक्षरता, जागरूकता अभियान और अभिभावकीय भागीदारी अधिक प्रभावी विकल्प हैं।

समाधान शिविर में प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध व प्रभावी समाधान सुनिश्चित करें - डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

आमजन की समस्याओं के त्वरित निपटारे के लिए जिला व उपमंडल स्तर पर लगाए जा रहे समाधान शिविर

पीपीपी स्टेट कोऑर्डिनेटर डॉ. सतीश खोला समाधान शिविर में पहुंचे

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 12 मार्च। जिला मुख्यालय स्थित लघु सचिवालय सभागार में गुरुवार को डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन हुआ। इस दौरान पीपीपी के स्टेट कॉर्डिनेटर डॉ सतीश खोला भी उपस्थित थे। शिविर के दौरान विभिन्न विभागों से संबंधित कुल छः शिकायतें प्राप्त हुईं।

इस अवसर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समाधान शिविर में प्राप्त प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध, पारदर्शी और संतोषजनक निपटारा सुनिश्चित किया जाए, ताकि नागरिकों को अनावश्यक रूप से सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य आमजन की समस्याओं का एक ही स्थान पर त्वरित समाधान उपलब्ध कराना है, जिससे सुशासन की अवधारणा को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। उपायुक्त ने सभी शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई कर शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक सोमवार और वीरवार प्रातः 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय के साथ-साथ बहादुरगढ़, बेरी और बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से प्रशासन आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य कर रहा है।

मुख्यमंत्री स्वयं करते हैं मॉनिटिरिंग : डॉ खोला

समाधान शिविर के दौरान पीपीपी स्टेट कोऑर्डिनेटर डॉ. सतीश खोला ने शिविर में पहुंचे नागरिकों से सीधा संवाद किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी नागरिकों की समस्याओं के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं और उनका स्पष्ट निर्देश है कि किसी भी व्यक्ति की शिकायत अनावश्यक रूप से लंबित नहीं रहनी चाहिए। मुख्यमंत्री श्री नायब सिहं सैनी निरंतर स्वयं समाधान शिविरों व अन्य माध्यमों से प्राप्त शिकायतों के समाधान की मॉनिटिरिंग करते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य है कि लोगों की समस्याओं का समाधान उनके नजदीक ही एक ही छत के नीचे आयोजित हो रहे समाधान शिविरों के माध्यम से किया जाए, ताकि उन्हें बार-बार सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, सीएमजीजीए खुशी कौशल, डीआरओ मनबीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी प्रदीप कुमार, डीआईओ अमित बंसल सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर रेट निर्धारण को लेकर एसडीएम का दौरा

परिवहन विशेष न्यूज

बालौर, नूना माजरा, सराय औरंगाबाद, नया गांव सहित कई गांवों में पहुंचकर किया निरीक्षण

एसडीएम ने कलेक्टर रेट निर्धारण से पहले लिया वास्तविक तथ्यों का जायजा

बहादुरगढ़, 12 मार्च। उपमंडल अधिकारी (नागरिक) अभिनव सिवाच ने कलेक्टर रेट के निर्धारण से संबंधित प्रक्रिया के तहत क्षेत्र के विभिन्न गांवों का दौरा कर मौके पर स्थिति का निरीक्षण किया। इस दौरान एसडीएम ने गांव बालौर, नूना माजरा, खेड़का मुसलमान, नया गांव सराय औरंगाबाद सहित कई गांवों में पहुंचकर जमीनों की वर्तमान स्थिति, बाजार भाव तथा संबंधित पहलुओं की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राजस्व विभाग के अधिकारियों को साथ लेकर क्षेत्र में प्रचलित भूमि दरों का अवलोकन किया तथा कलेक्टर रेट तय करने के लिए आवश्यक तथ्यों का जायजा लिया।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने बताया कि सरकार के निर्देशानुसार कलेक्टर रेट के निर्धारण की प्रक्रिया को पारदर्शी और तथ्यात्मक बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण किया जा रहा है, ताकि जमीनों के वास्तविक बाजार मूल्य के अनुरूप कलेक्टर रेट निर्धारित किए जा सकें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि क्षेत्र में भूमि मूल्यों से जुड़ी सभी आवश्यक जानकारी एकत्रित कर नियमानुसार रिपोर्ट तैयार की जाए, ताकि आगामी प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके। इस अवसर पर तहसीलदार सुदेश मेहरा, गिरदावर रमेश और अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पेट्रोल, डीजल, सीएनजी व एलपीजी की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश

डीसी ने अधिकारियों को दिए सख्त निगरानी व समन्वय के आदेश, जिला स्तर पर निगरारी के लिए एडीसी नोडल अधिकारी नियुक्त

पैनिक न होकर जरूरत से ज्यादा पैट्रोलियम प्रोडक्ट न खरीदें उपभोक्ता,

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 12 मार्च। जिला में पेट्रोल, डीजल, सीएनजी व एलपीजी की निर्बाध उपलब्धता और आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन ने आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने हरियाणा सरकार के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग द्वारा जारी निर्देशों के संदर्भ में यह आदेश जारी करते हुए संबंधित अधिकारियों को इनका कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने को कहा है।

जारी आदेशों के अनुसार अतिरिक्त उपायुक्त को जिला स्तर पर पेट्रोल, डीजल, सीएनजी और एलपीजी की उपलब्धता व आपूर्ति की निगरानी के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। वहीं जिले के सभी उपमंडल अधिकारियों (एसडीएम) को अपने-अपने उपमंडलों में इन पेट्रोलियम उत्पादों की उपलब्धता पर लगातार निगरानी रखने तथा किसी प्रकार की बनावटी कमी या अनियमितता न होने देने के निर्देश दिए गए हैं।

उपायुक्त ने जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक को निर्देश दिए हैं कि घरेलू एलपीजी गैस का व्यावसायिक उपयोग के लिए दुरुपयोग न हो। किसी भी स्तर पर जमाखोरी, निर्धारित रेट ज्यादा पैसे लेने या कालाबाजारी जैसी गतिविधियां न होने दी जाएं। सभी ऑयल मार्केटिंग कंपनियों, पेट्रोलियम डीलर्स और एलपीजी वितरकों को पर्याप्त स्टॉक बनाए रखने और उपभोक्ताओं को निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

डीसी ने कहा कि खाद्य एवं आपूर्ति विभाग पेट्रोलियम उत्पादों के स्टॉक, आपूर्ति, वितरण और खुदरा कीमतों की नियमित निगरानी करेगा, ताकि किसी प्रकार की बनावटी कमी की स्थिति पैदा न हो। साथ ही अस्पतालों और शैक्षणिक संस्थानों सहित आवश्यक संस्थानों के लिए एलपीजी, पीएनजी और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी।

उपायुक्त ने निर्देश दिए कि अतिरिक्त उपायुक्त जिला स्तर पर पेट्रोलियम उद्योग के समन्वयक के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखें, ताकि जिले की सभी गैस एजेंसियों पर एलपीजी सिलेंडरों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

उपायुक्त ने स्पष्ट किया कि यदि किसी भी स्तर पर जमाखोरी, कालाबाजारी, जिला के उपभोक्ता के लिए भेजे गए स्टॉक का दूसरे स्थान पर लेकर जाना, या अधिक कीमत वसूलने जैसी शिकायत सामने आती है तो संबंधित के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 तथा अन्य प्रासंगिक प्रावधानों के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी।

डीसी ने कहा कि पैनिक होकर जरूरत से ज्यादा पेट्रोलियम प्रोडक्ट ना खरीदें। सरकार के स्तर पर सभी संभव प्रयास किए जा रहे हैं। पेट्रो प्रोडक्ट की कमी नहीं होने जाएगी। डीसी ने निर्देश दिए कि जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक, ऑयल मार्केटिंग कंपनियां और अन्य संबंधित पक्ष प्रतिदिन इस संबंध में रिपोर्ट अतिरिक्त उपायुक्त को भेजेंगे। जिसे संकलित कर उपायुक्त कार्यालय को प्रति दिन प्रस्तुत किया जाएगा।

मेले में लगाया जाएगा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का जागरूकता स्टॉल

लोगों को दी जाएगी निःशुल्क विधिक सेवाओं व योजनाओं की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 12 मार्च। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) झज्जर द्वारा माता भीमेश्वरी देवी मंदिर, बेरी में आयोजित होने वाले मेले के दौरान विधिक जागरूकता स्टॉल लगाया जाएगा। यह मेला 19 मार्च से 27 मार्च 2026 तक आयोजित होगा।

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झज्जर द्वारा जारी आदेशों के अनुसार मेले में आने वाले श्रद्धालुओं व आमजन को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण तथा हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की योजनाओं और निःशुल्क विधिक सहायता के बारे में जागरूक किया जाएगा। इसके लिए पैरा लीगल वालंटियर्स को विभिन्न तिथियों में स्टॉल पर उपस्थित रहने की ड्यूटी लगाई गई है।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 19 मार्च से 21 मार्च तक सरोज देवी, शिवधन तथा रोशनी, 22 मार्च से 24 मार्च तक सरोज देवी, नवीन कुमारी व प्रेमवती तथा 25 मार्च से 27 मार्च तक सरोज देवी, बबीता कुमारी व अमला स्टॉल पर उपस्थित रहकर लोगों को कानूनी सहायता योजनाओं की जानकारी देंगी।

इंट्रा हरियाणा पोर्टल के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर बैठक आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 12 मार्च। जिला उपायुक्त की अध्यक्षता में गुरुवार को लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में इंट्रा हरियाणा पोर्टल के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों में पोर्टल के माध्यम से दी जा रही सेवाओं तथा कर्मचारियों से संबंधित ऑनलाइन प्रक्रियाओं, विशेषकर अवकाश (लीव) आवेदन की व्यवस्था की समीक्षा की गई।

बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि सभी विभाग इंट्रा हरियाणा पोर्टल के माध्यम से उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं का पूर्ण रूप से उपयोग सुनिश्चित करें, ताकि कर्मचारियों से संबंधित सेवाएं पारदर्शी व समयबद्ध तरीके से उपलब्ध हो सकें। उपायुक्त ने कहा कि कर्मचारियों की छुट्टियों सहित अन्य सेवाओं के लिए पोर्टल का उपयोग बढ़ाने से कार्य प्रणाली अधिक सुव्यवस्थित और डिजिटल होगी।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जिन विभागों में पोर्टल के उपयोग में किसी प्रकार की तकनीकी या प्रशासनिक कठिनाई आ रही है, उन्हें चिन्हित कर समय रहते समाधान किया जाए। साथ ही सभी विभागों से पोर्टल के पूर्ण या आंशिक क्रियान्वयन से संबंधित एक्शन टेकन रिपोर्ट भी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों में इंट्रा हरियाणा पोर्टल के उपयोग की स्थिति से अवगत कराया और सामने आ रही समस्याओं के बारे में भी जानकारी दी, जिस पर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

बैठक में एडीसी जगनिवास, एसडीएम अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, डीईओ रतिंद्र सिहं, डीआईओ अमित कुमार बंसल, सीएमजीजीए खुशी कौशल सहित सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

16 मार्च को होगा ट्रैक्टरों का भौतिक सत्यापन : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 12 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा की एसबी-89 योजना के तहत अनुसूचित श्रेणी के किसानों को ट्रैक्टर पर अनुदान देने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए चयनित किसानों के ट्रैक्टरों का भौतिक सत्यापन 16 मार्च 2026 को किया जाएगा। यह सत्यापन सहायक कृषि अभियंता कार्यालय, झज्जर में प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक किया जाएगा।

उपायुक्त ने बताया कि वर्ष 2025-26 के लिए इस योजना के तहत 27 दिसंबर 2025 से 15 जनवरी 2026 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए थे। इस दौरान अनुसूचित श्रेणी के कुल 222 किसानों ने आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि प्राप्त आवेदनों में से 20 फरवरी को ऑनलाइन ड्रा के माध्यम से 11 किसानों का चयन किया गया। चयनित किसानों द्वारा अपने-अपने ट्रैक्टर के बिल विभागीय पोर्टल पर अपलोड किए जा चुके हैं। अब निदेशालय के निर्देशानुसार इन चयनित किसानों के ट्रैक्टरों का भौतिक सत्यापन किया जाएगा, जिसके बाद योजना के तहत अनुदान जारी करने की आगे की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

उपायुक्त ने चयनित किसानों से निर्धारित तिथि व समय पर सहायक कृषि अभियंता कार्यालय, झज्जर में अपने ट्रैक्टर सहित उपस्थित होने का आह्वान किया है, ताकि भौतिक सत्यापन की प्रक्रिया समयबद्ध ढंग से पूर्ण की जा सके।

धरा ये कैसा वेश

अतृप्त चाहतों के नाम पर धरा है ये कैसा वेश,
रो रही है मानवता आपस में लड़ रहे जो देश,
खुद के स्वार्थ में कर रहे हैं प्रकृति का नुकसान,
फतेह करना चाहे महत्वाकांक्षाओं का आसमान ।

तोड़ रहे सीमाएं भुलकर भाईचारे का उपदेश,
कोई तो समझाएं उन्हें भेजें शांति का संदेश,
हाथों में थामें खड़े असंख्य परमाणु हथियार,
सभ्य इंसान होकर करें जानवरों सा व्यवहार ।

लूटना चाहते हैं खजाना कौन सा अति विशेष,
क्यों ज़ख्मी कर रहे है बहुरंगी सभ्यता अशेष,
कोहराम मचा रहा आज विश्व में दुखदाई ये खेल,
मौत का तमाशा रचा कौन होगा पास कौन फेल ।

अत्याचार अनाचार अनैतिक अमानवीय आवेश,
ईश तेरे श्आनंदश् महल में छाया ये कैसा परिवेश,
झुलस रहे क्रोध नफ़रत की आग में आम इंसान,
गंवा रहे है बेकसूर होकर भी मासूम अपनी जान ।

– मोनिका डागा "आनंद"

द्वारका सेक्टर 3 के पास झुग्गियों में लगी भीषण आग रात 11:30 के करीब

नवदीप सिंह

पश्चिमी दिल्ली में उस वक्त हड़कंप मच गया जब उत्तम नगर के मनसा राम पार्क इलाके में देर रात करीब 11:54 बजे झुग्गियों और दुकानों में भीषण आग लग गई।

देखते ही देखते आग की लपटें तेजी से फैलने लगीं और कई झुग्गियां व दुकानें इसकी चपेट में आ गईं। पूरे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया और लोग अपने सामान को बचाने में जुट गए।

सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाने की कोशिश की गई।

गनीमत रही कि अब तक किसी के हताहत होने की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन आग से भारी नुकसान की आशंका जताई जा रही है।

दिल्ली में गर्मी की शुरुआत के साथ ही आग लगने की घटनाएं बढ़ती नजर आ रही हैं, जिससे सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठ रहे हैं।

विद्युत पोल से टकराई स्कूल बस

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। प्रदेश में स्कूल बस हादसा के बाद भी जिला प्रशासन नहीं ले रहा है सबक आज सरस्वती शिशु मंदिर की बस छुट्टी के बाद रेलवे कॉलोनी मथुरा में बच्चों को छोड़ने जब आ रही थी तो रास्ते में बस चालक के द्वारा मोबाइल पर बात करते समय गाड़ी का संतुलन बिगड़ गया और गाड़ी विद्युत पोल से टकरा गई गनीमत रही कि विद्युत पोल टूटा नहीं नहीं तो हो सकता था बड़ा हादसा ।क्योंकि विधुत पोल करेंट आ रहा था । हादसे के बाद एक बच्चे को मामूली चोट आई दूसरे वाहन से बच्चों को घर जाने की व्यवस्था की गई । घटना की सूचना पर ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने गंभीरता से लेते हुए जिले के आला अधिकारियों से बात करने के बाद मथुरा में इस तरह की घटना की पुनर्वती ना हो इसके लिए जिला प्रशासन करें कोई ठोस कार्रवाई अन्यथा शासन को भेजी जाएगी

रिपोर्ट, क्योंकि लगातार एक के बाद एक घटनाएं को रही हैं । घटना करने वाले स्कूल बस चालक का ड्राइविंग लाइसेंस किया जाए निरस्त । घटना के बाद जिलाधिकारी बुलाए सड़क सुरक्षा समीक्षा की आवश्यक बैठक ।

माहवारी स्वच्छता का बढ़ता बाजारवाद

काजल कसेर, समाज एवं पर्यावरण कार्यकर्ता, जांजगीर

परिवहन विशेष न्यूज

जांजगीर,छत्तीसगढ़। चाहे इतिहास के पन्नों को खोलकर देखा जाए या आधुनिक समाज का विश्लेषण किया जाए, समाजवाद, भौतिकवाद और बाजारवाद—तीनों के निशाने पर सबसे पहले महिलाएँ ही आती हैं। पहले गोरेपन की क्रीम जैसे उत्पादों के माध्यम से महिलाओं की बाहरी सुंदरता को प्रभावित करने की कोशिश की गई, लेकिन आज बाजारवाद महिलाओं के शरीर के भीतर तक पहुँच चुका है। माहवारी से जुड़े उत्पादों का बढ़ता व्यापार इसी का एक उदाहरण है, जहाँ प्राकृतिक प्रक्रिया को अस्वच्छ बताकर महंगे उत्पादों का बाजार खड़ा कर दिया गया है।

माहवारी को "अस्वच्छ" बताने की प्रवृत्ति

परंपरागत समाज ने मासिक धर्म को अक्सर अशुद्धि से जोड़ दिया, जिससे महिलाओं के साथ सामाजिक भेदभाव हुआ। लेकिन आधुनिकता भी इस मामले में पूरी तरह न्यायपूर्ण नहीं रही।

आधुनिक बाजार ने इसे "अस्वच्छ" बताकर महिलाओं को महंगे और रसायनयुक्त उत्पादों के उपयोग के लिए प्रेरित किया। हाइजीन के नाम पर सेनेटरी नैपकिन और टेंपोन का व्यापक प्रचार हुआ, जबकि यह भी सच है कि इनमें कई प्रकार के रसायन होते हैं, जो महिलाओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए चिंता का विषय बनते जा रहे हैं।

पीरियड्स ब्लड : एक वैज्ञानिक दृष्टि

विज्ञान के अनुसार मासिक धर्म के दौरान निकलने वाला रक्त केवल अपशिष्ट नहीं होता। कई शोधों में पाया गया है कि इसमें ऐसी कोशिकाएँ और तत्व होते हैं जिनका उपयोग चिकित्सकीय अनुसंधान में भी किया जा रहा है। कुछ वैज्ञानिक अध्ययनों में यह भी उल्लेख मिलता है कि इसमें ऐसे सूक्ष्म तत्व होते हैं जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

पर्यावरण पर बढ़ता खतरा

पहले महिलाएँ सूती कपड़ों का उपयोग करती थीं, जो आसानी से विघटित हो जाते थे। लेकिन आजकल उपयोग होने वाले अधिकांश सेनेटरी पैड और टेंपोन प्लास्टिक व रसायनों से बने होते हैं, जिन्हें पूरी तरह नष्ट होने में 100 से 200 वर्ष तक का समय लग सकता है।

इन उत्पादों में पाए जाने वाले फ्थैलेट्स (Phthalates) और डाइऑक्सिन (Dioxins) जैसे रसायन शरीर में प्रवेश कर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं।

आज कई महिलाएँ अनियमित मासिक चक्र, हार्मोनल असंतुलन और अन्य समस्याओं से जूझ रही हैं, जिन पर गंभीर चर्चा की आवश्यकता है।

माहवारी प्रबंधन : संवाद की जरूरत

माहवारी प्रबंधन एक अत्यंत संवेदनशील विषय है, लेकिन समाज में इस पर खुलकर चर्चा नहीं होती। परिणामस्वरूप कई महिलाएँ सही जानकारी से वंचित रह जाती हैं और बाजार के प्रभाव में ऐसे उत्पादों का उपयोग करती हैं जिनके बारे में उन्हें पूरी जानकारी नहीं होती।

केवल फेमिनिज्म नहीं, इको-फेमिनिज्म की जरूरत

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए केवल आर्थिक और सामाजिक अधिकार ही पर्याप्त नहीं हैं।

आज आवश्यकता है इको-फेमिनिज्म की—जहाँ महिला और प्रकृति के संबंध को समझते हुए जीवनशैली अपनाई जाए।

महिलाओं को चाहिए कि वे प्राकृतिक और पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों जैसे बायोडिग्रेडेबल पैड या सूती कपड़ों से बने नैपकिन का उपयोग करें। इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण होगा बल्कि स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी कम होंगे।

निष्कर्ष

माहवारी कोई अभिशाप नहीं, बल्कि स्त्री शरीर की एक स्वाभाविक और शक्तिशाली प्रक्रिया है। महिलाओं को चाहिए कि वे सामाजिक रूढ़ियों और बाजारवाद दोनों से सावधान रहते हुए अपने शरीर को समझें, स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान रखें तथा प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने का प्रयास करें। क्योंकि यह केवल जैविक प्रक्रिया नहीं, बल्कि स्त्री शक्ति का जीवंत प्रमाण है।

स्नेह माधुरी कुंज में निकुंज लीला प्रविष्ट सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) के प्रथम स्मृति महोत्सव में हुआ महंतों का सम्मान व समाज गायन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी (चार सम्प्रदाय आश्रम के पीछे) स्थित स्नेह माधुरी कुंज के अधिष्ठाता निकुंज लीला प्रविष्ट सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) का प्रथम स्मृति महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है।जिसके अंतर्गत टटिया स्थान के हरिदासी संतों द्वारा संगीतमय समाज गायन किया गया।तत्पश्चात महंतों का सम्मान व प्रसाद ग्रहण आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पूज्य महाराजश्री की परम कृपापात्र शिष्या साध्वी मीरा बहिनजी ने कहा कि संत प्रवर विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) ने अपने निकुंज गमन के पूर्व ही यह समस्त कार्यक्रम सुनियोजित किए थे।जिनका निर्वहन उनके शिष्यों व भक्तों के द्वारा पूर्ण निष्ठा व समर्पण के साथ किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पूज्य महाराजश्री ने अपना समूचा जीवन श्रीराधा रानी की उपासना और प्रभु भक्ति का प्रचार-प्रसार करते हुए व्यतीत किया।उन्होंने श्रीधाम वृन्दावन में रहते हुए अपनी कठोर साधना व भजन के प्रताप से असंख्य भक्तों-श्रद्धालुओं को प्रभु भक्ति के मार्ग से जोड़कर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

महोत्सव के मीडिया प्रभारी रूयूपी रत्नरू डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 13 मार्च को संत-वैष्णव सेवा, 16 मार्च को ब्राह्मण-ब्रजवासी सेवा, 18 मार्च को सायं 04 बजे से विराट संत-विद्वत संगोष्ठी, 28 मार्च को ब्रज गोपियों की सेवा एवं 29 मार्च को बाल गोपाल सेवा आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

महोत्सव में चतुः संप्रदाय के श्रीमहंत बाबा फूलडोल बिहारीदास महाराज, श्रीहित बड़ा रासमण्डल के अध्यक्ष श्रीमहंत हित लाडली शरण देवाचार्य महाराज, हिताश्रम के महंत श्रीहित कमल दास महाराज, श्रीमज्जगद्गुरु पीपाद्वाराचार्य बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, श्रीउमाशक्ति पीठाधीश्वर दंडी स्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज, चार सम्प्रदाय आश्रम के महंत ब्रजबिहारी दास महाराज, हनुमान टेकरी आश्रम के महंत दशरथदास महाराज, प्रमुख समाजसेवी मुकेश खंडेलवाल, कुशलेश खंडेलवाल, बसन्त कुलकर्णी, ललित कुलकर्णी (भोपाल), मुरली दास महाराज, महंत नवल बिहारी दास, सुखदेव दास महाराज (काकाजी) एवं युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अत्यन्त प्राचीन व सिद्ध स्थली है बेरिया वन आश्रम व गौशाला : बाबा संतदास महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। अक्रूर स्थित श्रीराम जानकी मन्दिर (बेरिया बाबा गौशाला एवं आश्रम) में संत प्रवर राम लखन दास महाराज (बेरिया वाले बाबा) का सात दिवसीय 21 वां साकेत गमनोत्सव महंत राम चंद्र दास महाराज (मौनी बाबा) के पावन सानिध्य में अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत श्रीमद्रामचरित मानस नवाह्न पारायण पाठ, श्यामा मंडल व दिल्ली के भक्तों के द्वारा सरस भजन संध्या संपन्न हुई।जिसमें ठाकुरश्री राधा-कृष्ण की महिमा से ओतप्रोत भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।तत्पश्चात रसिक संतों द्वारा मंगल बधाई समाज गायन एवं समस्त भक्त परिकर के द्वारा संगीतमय सामूहिक सुन्दर काण्ड पाठ आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

श्रीराधा उपासना कुंज के श्रीमहंत बाबा संतदास महाराज एवं महंत राम चंद्र दास महाराज (मौनी बाबा) ने कहा कि बेरिया वन अत्यन्त प्राचीन व सिद्ध स्थली है ।ये कई भगवद्प्राप्त संतों व भक्तों की तपोभूमि रही है ।यहां आने वाले लोगों की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया एवं प्रख्यात साहित्यकार रूयूपी रत्नरू डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि संत प्रवर राम लखन दास महाराज (बेरिया वाले बाबा) परम-तपस्वी व भजनानंदी थे। हम सभी ने परमात्मा को कहां देखा है, पूज्य राम लखन दास महाराज (बेरिया वाले बाबा) जैसे दिव्य सन्त ही हमें पृथ्वी पर प्रभु सत्ता का आभास कराते हैं।

इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देवजू महाराज, धरणीधर महाराज (बद्रिकाश्रम), महंत हरिशंकर नागा, महंत मोहिनी बिहारी शरण महाराज, दिनेश (फिरोजाबाद), रमेश कोचर, कमल सिंघल, श्रीमती पिंकी माथुर (दिल्ली), राजेश, डॉ. गोपाल मिश्रा, श्रीमती मीरा-महेंद्र अरोड़ा, नीलेश कुशवाहा, श्रीमती ममता खट्टर, पूर्व विधायक प्रणत पाल, पूर्व विधायक प्रदीप माथुर, प्रमुख समाजसेविका व मां सीता रसोई की संस्थापिका रूपंजाब रत्नरू श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना), सनातन सेवी अंशुल पाराशर, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, स्वामी गंगानंद महाराज (कोतवाल) आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महोत्सव का समापन महंतों का सम्मान व सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

बिनावर क्षेत्र में खनन अधिकारी ने मारा छापा, खनन अधिकारी की गाड़ी को देखकर खनन माफिया हुए भागने में कामयाब, जिसको लेकर क्षेत्र में खनन माफिया में मचा हड़कंप

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूं: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में अवैध मिट्टी खनन का काला कारोबार थमने का नाम नहीं ले रहा है। गुरुवार रात थाना बिनावर क्षेत्र के बिलहैत गांव में टीले काटकर किए जा रहे अवैध मिट्टी खनन की सूचना पर गुरुवार रात खनन विभाग की टीम मौके पर पहुंची, उससे पहले ही खनन माफिया जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर ट्रालियां लेकर भाग गए। सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से पता चला है कि यह अवैध मिट्टी खनन का कार्य तीन दिन से तथाकथित सत्ताधारी नेता के संरक्षण में चल रहा था। जिसके कारण पुलिस प्रशासन भी अवैध खनन माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई करने में असफल होता नजर आ रहा है। जिस कारण थाना बिनावर क्षेत्र में खनन माफिया के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं जिन्हें ना तो पुलिस प्रशासन का कोई खौफ है और ना ही माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ सरकार का। इस मामले में बिलहैत गांव के एक व्यक्ति ने जिला अधिकारी बदायूं अवनीश राय एवं बदायूं खनन विभाग अधिकारी गुलशन कुमार को अवैध खनन होने की सूचना दी। सूचना मिलने पर खनन विभाग की टीम ने थाना बिनावर क्षेत्र के दर्जनों गांव में छापामारी की लेकिन खनन माफिया खनन विभाग की गाड़ी को देखकर भागने में कामयाब हुए। ग्रामीणों द्वारा बताया जा रहा है कि यह अवैध मिट्टी खंड का कार्य थाना बिनावर क्षेत्र में लंबे समय से चला आ रहा है। जिस पर अभी तक उच्च अधिकारियों द्वारा कोई भी आज तक कार्रवाई नहीं की गई है।

हर उपभोक्ता को मिलेगा सिलेंडर

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। जिले में घरेलू गैस सिलेंडर को लेकर उपभोक्ताओं के बीच असमंजस और घबराहट का माहौल देखने को मिल रहा है। बड़ी संख्या में लोग एहतियात के तौर पर गैस एजेंसियों और गोदामों पर पहुंचकर अतिरिक्त सिलेंडर लेने की कोशिश कर रहे हैं। स्थिति यह है कि जिन उपभोक्ताओं के घरों में पहले से गैस सिलेंडर मौजूद है, वे भी दूसरा और तीसरा सिलेंडर लेने के लिए गैस एजेंसियों पर पहुंच रहे हैं, जिसके चलते कई स्थानों पर लंबी कतारें लग जा रहीं हैं। गैस एजेंसियों पर बढ़ती भीड़ और संभावित अव्यवस्था को देखते हुए जिलाधिकारी दीपक मीणा ने मामले को गंभीरता से लेते हुए गैस वितरण व्यवस्था को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाए रखने के लिए कड़े निर्देश जारी किए हैं। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जनपद में गैस की कोई कमी नहीं है, लेकिन अनावश्यक रूप से अतिरिक्त सिलेंडर लेने की प्रवृत्ति से वितरण व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। इसी क्रम में जिलाधिकारी दीपक मीणा ने गुरुवार सुबह शहर की दो गैस एजेंसियों पर औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गोदामों में उपलब्ध गैस सिलेंडरों का स्टॉक, आपूर्ति और उपभोक्ताओं को किए जा रहे वितरण की पूरी जानकारी ली। डीएम ने एजेंसी संचालकों से स्पष्ट तौर पर पूछा कि गोदाम पर कितने सिलेंडर पहुंचे, कितने उपभोक्ताओं को वितरित किए गए और वर्तमान में कितना स्टॉक शेष है। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने एजेंसी संचालकों को सख्त हिदायत देते हुए कहा कि किसी भी उपभोक्ता को घरेलू गैस सिलेंडर के लिए परेशान नहीं किया जाना चाहिए।

आईएएस बनाम इनोवेशन: क्या हम सिर्फ 'मैनेजर' पैदा कर रहे हैं?

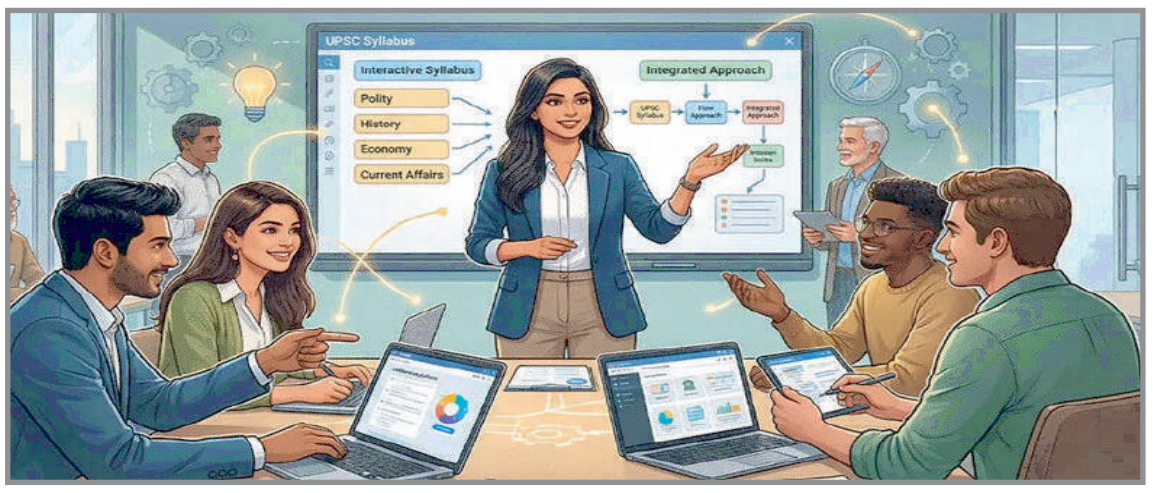

● डॉ. विजय गर्ग

वैज्ञानिक और इनोवेटर्स 'असफलता' से सीखते हैं। थॉमस एडिसन हजारों बार फेल हुए तब बल्ब बना। इसके विपरीत, सरकारी तंत्र में 'फेलियर' का मतलब होता है सस्पेंशन या जांच। इसलिए, कोई भी अधिकारी लीक से हटकर कुछ 'क्रांतिकारी' करने के बजाय सुरक्षित रास्ता चुनना बेहतर समझता है।

भारत में आईएएस को समाज में सबसे ऊंचा दर्जा प्राप्त है। इसमें कोई शक नहीं कि देश की विविधता को संभालने और कानून व्यवस्था बनाए रखने में नौकरशाही की बड़ी भूमिका रही है। लेकिन, जब बात 'क्रांतिकारी विचारों' या वैश्विक स्तर पर गेम-चेंजिंग इनोवेशन की आती है, तो यह सिस्टम अक्सर पीछे रह जाता है।

1. प्रशासन बनाम आविष्कार

एक आईएएस अधिकारी का मुख्य काम मौजूदा सिस्टम को कुशलतापूर्वक चलाना होता है। वे 'मैनेजर' हैं, 'क्रिएटर' नहीं।

एक वैज्ञानिक शून्य से कुछ नया बनाता है।

एक इनोवेटर पुरानी समस्याओं का बिल्कुल नया समाधान (जैसे युपीआई या स्वदेशी वैक्सीन) ढूंढता है।

प्रशासन केवल इन सुविधाओं को जनता तक पहुँचाने का जरिया बनता है।

2. जोखिम लेने की कमी

वैज्ञानिक और इनोवेटर्स 'असफलता' से सीखते हैं। थॉमस एडिसन हजारों बार फेल हुए तब जाकर बल्ब बना। इसके विपरीत, सरकारी तंत्र में 'फेलियर' का मतलब होता है सस्पेंशन या जांच। इसलिए, कोई भी अधिकारी लीक से हटकर कुछ 'क्रांतिकारी' करने के बजाय सुरक्षित रास्ता चुनना बेहतर समझता है।

3. देश को किसकी सबसे ज्यादा जरूरत है?

आज भारत जिस मोड़ पर खड़ा है, हमें फाइलें साइन करने वालों से ज्यादा समस्या सुलझाने वालों की जरूरत है:

वैज्ञानिक: जो ऊर्जा संकट, क्लाइमेट चेंज और नई बीमारियों का इलाज ढूंढ सकें।

इनोवेटर्स: जो खेती से लेकर कचरा प्रबंधन तक के लिए सस्ते और प्रभावी तकनीक विकसित कर सकें।

एंटरप्रेन्योर्स: जो केवल सरकारी नौकरी न मांगें, बल्कि हजारों लोगों के लिए रोजगार पैदा करें।

बदलाव की लहर: 'जनरल' से 'स्पेशलिस्ट' की ओर

अब समय आ गया है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली और सामाजिक सोच को बदलें।

विशेषज्ञता : हमें जनरल एडमिनिस्ट्रेटर्स की जगह उस क्षेत्र के विशेषज्ञों (जैसे हेल्थ टेक, एआई, और स्पेस साइंस) को निर्णय लेने की शक्ति देनी होगी।

सम्मान का पुनर्वितरण: जब समाज में एक 'पेटेंट' कराने वाले वैज्ञानिक को एक 'कलेक्टर' के बराबर या उससे अधिक सम्मान मिलेगा, तभी देश का युवा लैब की ओर आकर्षित होगा।

"प्रशासन देश को स्थिरता देता है, लेकिन नवाचार देश को महान बनाता है।"

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के सामने आज कई बड़ी चुनौतियाँ हैं—जनसंख्या, पर्यावरण संकट, ऊर्जा की बढ़ती मांग, कृषि समस्याएँ और तकनीकी प्रतिस्पर्धा। इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल प्रशासनिक प्रबंधन ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक सोच और नवाचार की भी उतनी ही आवश्यकता है।

अक्सर यह चर्चा होती है कि देश में प्रशासनिक सेवाओं, विशेष रूप से भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) को बहुत प्रतिष्ठा और महत्व दिया जाता है। यह सच है कि आईएएस अधिकारी शासन और नीतियों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन देश के दीर्घकालिक विकास के लिए केवल प्रशासनिक ढांचा ही पर्याप्त नहीं होता। इसके लिए वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और नवाचार करने वाले युवाओं की भी उतनी ही जरूरत होती है।

प्रशासन और नवाचार का संतुलन

आईएएस अधिकारी नीतियों को लागू करते हैं, योजनाओं का संचालन करते हैं और प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु बनाते हैं। लेकिन नई तकनीकों, वैज्ञानिक खोजों और औद्योगिक नवाचारों के बिना किसी भी देश की प्रगति सीमित रह जाती है।

इतिहास गवाह है कि जिन देशों ने विज्ञान और अनुसंधान को प्राथमिकता दी, वे वैश्विक स्तर पर तेजी से आगे बढ़े। उदाहरण के लिए अंतरिक्ष विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी और चिकित्सा के क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिकों ने मानव जीवन को नई दिशा दी है।

वैज्ञानिकों की भूमिका

भारत में भी कई महान वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने देश की पहचान विश्व स्तर पर स्थापित की। जैसे ए पी जे. अब्दुल कलाम, जिन्होंने मिसाइल और अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, और सी वी रमन, जिनकी खोज ने विज्ञान की दुनिया में भारत का नाम रोशन किया।

इन वैज्ञानिकों के योगदान ने यह सिद्ध किया कि ज्ञान और अनुसंधान से देश की दिशा बदली जा सकती है।

नवाचार की आवश्यकता

आज के समय में दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रही है। यदि भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूत बनना है, तो युवाओं को विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार की ओर प्रेरित करना होगा।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शोध की संस्कृति विकसित करना, प्रयोगशालाओं को मजबूत करना और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना समय की मांग है।

युवाओं के लिए संदेश

आज कई युवा केवल प्रशासनिक सेवाओं या सरकारी नौकरियों को ही सफलता का एकमात्र रास्ता मान लेते हैं। जबकि देश को ऐसे युवाओं की भी जरूरत है जो नई तकनीक विकसित करें, वैज्ञानिक खोजें करें और समाज की समस्याओं के नए समाधान खोजें।

यदि अधिक से अधिक युवा वैज्ञानिक, इंजीनियर और इनोवेटर बनेंगे, तो देश की अर्थव्यवस्था, उद्योग और तकनीक सभी क्षेत्रों में तेजी से प्रगति होगी।

निष्कर्ष

प्रशासनिक सेवाएँ देश की व्यवस्था को मजबूत बनाती हैं, लेकिन वास्तविक परिवर्तन अक्सर विज्ञान और नवाचार के माध्यम से आता है। इसलिए भारत को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो केवल नौकरी पाने के बजाय नई खोज करने और नए विचार देने का साहस रखें।

जब प्रशासनिक दक्षता और वैज्ञानिक नवाचार साथ मिलकर काम करेंगे, तभी भारत एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल
मलोट पंजाब

नाना फड़नवीस : मराठा कूटनीति का चाणक्य

प्रमोद दीक्षित मलय

मराठा साम्राज्य का संदर्भ आते ही आंखों के सम्मुख छत्रपति शिवाजी महाराज की छवि उभरती है, जिन्होंने मुगलों के काल में भारत में मराठा साम्राज्य को न केवल एक शक्ति के रूप में स्थापित किया बल्कि राजनीति, कूटनीति, प्रशासन एवं युद्धशैली को नवल अर्थ भी दिए। किंतु शिवाजी महाराज के अवसान के पश्चात्सुयोग्य एवं दूरदर्शी नेतृत्व के अभाव में मराठा शक्ति क्षीणतर होती गई और राज्य संचालन एवं प्रशासन के सूत्र पेशवा (प्रधानमंत्री) के हाथों में स्थानांतरित होते गये। छत्रपति शाहूजी महाराज ने बालाजी विश्वनाथ भट्ट को प्रथम पेशवा (प्रधानमंत्री) के रूप में नामित किया था। छत्रपति शाहूजी महाराज के द्वारा मनोनीत पेशवा पद वंशानुगत हो गया और कालांतर में पेशवा ही मराठा शासक के रूप में स्थापित हो गये। नाना फडनवीस पेशवा के अधीन एक राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ के साथ ही कुशल युद्धनीतिज्ञ, दूरदर्शी, स्वामिभक्त, चतुर प्रशासक और मराठा साम्राज्य के हितैषी थे। उन्होंने पानीपत के तृतीय युद्ध की पराजय से बिखरी मराठा सैन्य शक्ति, कमजोर आर्थिक स्थिति और निरंकुश प्रशासन को अपनी कार्य कुशलता से पुनः स्थापित किया। इतिहासकारों ने नाना फड़नवीस को मराठा साम्राज्य का चाणक्य और मैकियावेली कहा। वह निःस्वार्थ सेवा-साधना, समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा के अनुपम उदाहरण बन गये।

नाना फड़नवीस का जन्म सह्याद्रि पर्वत श्रंखला क्षेत्र में प्रवाहित कृष्णा नदी के तट पर अवस्थित मराठा शक्ति केन्द्र सतारा में 13 फरवरी, 1742 को हुआ था। इनका मूल नाम बालाजी जनार्दन भानु था, किंतु नाना फड़नवीस के नाम से कीर्ति पताका अद्यावधि फहर रही है। छत्रपति शाहूजी महाराज ने 1713 में बालाजी विश्वनाथ भट्ट को पेशवा नियुक्त किया जो 1720 तक पदासीन रहे। नाना फड़नवीस के दादा बालाजी महादजी भानु पेशवा के मित्र और मराठा साम्राज्य सेवा में कार्यरत थे। मुगलों द्वारा पेशवा बालाजी विश्वनाथ की हत्या की रची गई साज़िश का पर्दाफाश कर पेशवा की प्राण रक्षा करने पर नाना फड़नवीस के दादा को फडनवीस की उपाधि प्रदान की गई थी, जो आगे चलकर उनके वंश की पहचान बन गई। 1720 से 1740 तक बाजीराव प्रथम पेशवा रहे, जो कभी कोई युद्ध नहीं हारे और मराठा साम्राज्य को शिखर पर पहुंचाया। 1740 से 1761 तक बालाजी बाजीराव पेशवा का कार्यकाल रहा, जिनके सेनापति थे सदाशिवराव भाऊ। नाना फड़नवीस इन्हीं सदाशिवराव भाऊ के सचिव थे। पेशवा बालाजी बाजीराव के तीन पुत्र थे विश्वासराव, माधवराव और नारायण राव। वर्ष 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध अहमदशाह अब्दाली और पेशवा के बीच हुआ। इस भयंकर युद्ध में मराठों की करारी हार हुई, शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई और आर्थिक स्थिति बदतर हो गई। युद्ध में राजकुमार विश्वासराव, सेनापति सदाशिवराव भाऊ सहित हजारों मराठा वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। नाना फड़नवीस सहित सीमित संख्या में मराठा नायक ही शेष बचे थे। आगे युद्ध की हार और पुत्र वियोग में पेशवा बालाजी बाजीराव ने एक मंदिर में शोकावस्था में प्राण त्याग दिए। तब 1761 में बालाजी के 17 वर्षीय द्वितीय पुत्र माधवराव पेशवा पद पर आरूढ़ हुए। नाना फड़नवीस के परामर्श से पेशवा माधवराव मराठा साम्राज्य की गिरती साख को न केवल संभाल पाये बल्कि राज-काज को सुव्यवस्थित कर राज्य की बदहाली को दूर कर राजकोष को समृद्ध किया। इसी दौरान नाना फड़नवीस के नेतृत्व में निजाम को पराजित कर एक बड़ा क्षेत्र मराठा राज्य में मिला लिया। फड़नवीस की राह फूलों भरी नहीं, बल्कि कंटकमय थी। पेशवा माधवराव का सगा चाचा रघुनाथ राव राघोबा स्वयं पेशवा बनने की इच्छा पाले हुए था, और कुचक्र रच रहा था। किंतु नाना फड़नवीस की बुद्धिमत्ता, राजनीतिक समझ और प्रशासन पर सख्त पकड़ के चलते विरोधी सफल नहीं हो पा रहे थे। नाना ने अपनी मेधा से एक बहुत चतुर गुप्तचर विभाग स्थापित किया था, जो राज्य के किसी भी कोने में पेशवा के विरुद्ध रची जा रही दुरभिसंधि की सूचना नाना फड़नवीस को यथाशीघ्र पहुंचा देता था। मराठा राज्य विकास के पथ पर बढ़ रहा था पर नियति ने खेल खेला, पेशवा माधवराव का 1772 में निधन हो गया। छोटे भाई नारायणराव अब पेशवा बने, किंतु इनमें न राजकाज की पर्याप्त समझ थी और न ही राजनीतिक परिपक्वता। रघुनाथराव की पेशवा बनने की स्वप्न-बेल अब पुष्पित हो फलित होने को थी। अगस्त 1773 में अंगरक्षकों ने ही महल के अंदर नारायणराव की हत्या कर दी, और अंततः महत्वाकांक्षी रघुनाथराव पेशवा की गद्दी पर बैठा गया। नाना फड़नवीस के लिए यह असहनीय था। उन्होंने सिंधिया, होल्कर, गायकवाड़, भोसले मराठा शक्ति का संघ बनाया और तुकोजीराव होल्कर, महादजी सिंधिया, हरिपंत फड़के, फलंटकर, भगवान राव प्रतिनिधि, सखारामबापू बोकिल, त्रिम्बकराम पेठे, सरदारजी रस्ते, बाबूजी नायक, मोलोजी घोरपड़े और मोरोबा फड़नीस आदि मंत्रियों की बाराभाई परिषद की रचना की। परिषद के साथ मिलकर रघुनाथराव को पदच्युत कर नारायणराव के 40 दिन के शिशु सवाई माधवराव को पेशवा पद पर आसीन करा स्वयं मुख्यमंत्री बन मराठा राज्य संभाल लिया। पर रघुनाथराव भाग कर ईस्ट इंडिया कंपनी से मदद मांगने चला गया और सूरत की संधि पर हस्ताक्षर कर कुछ महत्वपूर्ण मराठा क्षेत्र अंग्रजों को सौंप दिए, अंग्रेजों ने उसकी सैन्य मदद की। तभी इस संधि की काट के लिए कूटनीति से काम ले नाना फड़नवीस ने ईस्ट इंडिया कंपनी की कलकत्ता परिषद के साथ पुरंदर की संधि कर ली, कंपनी रघुनाथ राव को पेंशन देने पर सहमत हुई। आगे अंग्रेजों से खतरा भांपते हुए 1777 में फड़नवीस ने पश्चिमी तट पर फ्रांसीसी सेना को बंदरगाह प्रदान किया। फलतः अंग्रेजों से मराठाओं का युद्ध हुआ। मराठे जीते और कंपनी द्वारा 1773 से जीते गये सभी क्षेत्र वापस ले लिए। आगे 1783 में पुनः अंग्रेजों को पराजित कर ग्वालियर के निकट सालबाई स्थान पर संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए। कंपनी ने रघुनाथ राव का समर्थन छोड़ दिया और मराठों की प्रभुता स्वीकार कर ली।

मिडिल ईस्ट की भू-राजनीति में गहराता तनाव- भारत सरकार अलर्ट मोड पर-नागरिकों की सुरक्षा और सामरिक हितों की रक्षा के लिए तीन मंत्रियों की उच्च स्तरीय संकटकालीन समिति गठितएक्शन शुरू -समग्र विश्लेषण

मिडिल ईस्ट संकट,स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ और भारत की ऊर्जा सुरक्षा-वैश्विक भू-राजनीति के बीच रणनीतिक संतुलन की चुनौती
मिडिल ईस्ट की भू-राजनीति चाहे जिस दिशा में जाए, ऊर्जा सुरक्षा आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थव्यवस्था की सबसे निर्णायक शक्ति बनी रहेगी- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति में ऊर्जा संसाधन केवल आर्थिक विकास का आधार नहीं रहे, बल्कि वे रणनीतिक शक्ति, कूटनीति और भू- राजनीतिक संघर्षों का केंद्र बन चुके हैं। विशेष रूप से पश्चिम एशिया यानें मिडिल ईस्ट क्षेत्र विश्व की ऊर्जा राजनीति का धुरी रहा है। वर्तमान में ईरान, अमेरिका और इज़राइल के बीच बढ़ता सैन्य तनाव एक ऐसे मोड़ पर पहुंच चुका है जहां इसका प्रभाव केवल क्षेत्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है बल्कि पूरी दुनियाँ की ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार और आर्थिक स्थिरता पर पड़ रहा है।इसी पृष्ठभूमि में दुनियाँ का सबसे महत्वपूर्ण समुद्री ऊर्जा मार्ग स्ट्राइट ऑफ़ होर्मूज़ वैश्विक चर्चा के केंद्र में आ गया है।यह जलडमरूमध्य विश्व के तेल व्यापार कीजीवनरेखा माना जाता है। यहां होने वाली किसी भी अस्थिरता का असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर तुरंत दिखाई देता है। हाल के दिनों में इस मार्ग से गुजरने वाले जहाजों पर हमलों,ड्रोन हमलों औरसंभावित खदान बिछाने की खबरों ने अंतरराष्ट्रीय बाजारों को अस्थिर कर दिया है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि इसी कारण भारत सहित कई देशों ने अपनी ऊर्जा सुरक्षा को लेकर सतर्कता बढ़ा दी है।मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव को भारत सरकार ने अत्यंत गंभीरता से लिया है। भारत दुनियाँ का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक देश है और उसकी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है। ऐसे में किसी भी प्रकार की आपूर्ति बाधा सीधे भारत की अर्थव्यवस्था और आम लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकती है।इसी संभावित खतरे को देखते हुए भारत सरकार ने उच्च स्तर पर तैयारी शुरू कर दी है। केंद्र सरकार ने स्थिति की निगरानी और संभावित संकट से निपटने के लिए तीन सदस्यीय मंत्री समूह का गठन किया है जिसकीअध्यक्षता देश के गृहमंत्री कर रहे हैं। इस समिति में विदेश मंत्री और पेट्रोलियम मंत्री भी शामिल हैं।यह समिति विभिन्न मंत्रालयों और ऊर्जा कंपनियों के साथ मिलकर लगातार स्थिति की समीक्षा कर रही है। सरकार का उद्देश्य स्पष्ट है देश में पेट्रोल, डीज़ल, गैस और एलपीजी की आपूर्ति किसी भी परिस्थिति में बाधित न हो।पीएम कार्यालय ने भी इस विषय पर सभी संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित करने और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाए रखने के निर्देश दिए हैं।

साथियों बात अगर हम ऊर्जा सुरक्षा और घरेलू आपूर्ति : सरकार की प्राथमिकता को समझने की करें तो भारत की ऊर्जा जरूरतें तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ लगातार बढ़ रही हैं।औद्योगिक उत्पादन, परिवहन, कृषि और घरेलू उपयोग सभी क्षेत्रों में पेट्रोलियम उत्पादों की मांग अत्यधिक है। इस कारण सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि अंतरराष्ट्रीय संकट का असर भारतीय उपभोक्ताओं पर न्यूनतम हो।तेल कंपनियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे पर्याप्त भंडारण बनाए रखें और वितरण व्यवस्था को सुचारु रखें। इसके अलावा घरेलू एलपीजी सिलेंडर की आपूर्ति को प्राथमिकता देने के लिए विशेष व्यवस्थाएं की जा रही हैं। कुछ क्षेत्रों में एलपीजी की अस्थायी कमी की खबरें जरूर सामने आई हैं, जिससे लोगों में चिंता बढ़ी है, लेकिन सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह व्यापक संकट नहीं है बल्कि वितरण व्यवस्था से जुड़ी स्थानीय समस्या हो सकती है।सरकार ने इस स्थिति को नियंत्रित करने के लिए विशेष कंट्रोल रूम भी स्थापित किया है ताकि देशभर में एलपीजी की उपलब्धता पर लगातार निगरानी रखी जा सके। यह कदम इस बात का संकेत है कि भारत सरकार संभावित संकट से पहले ही तैयारी करना चाहती है।

साथियों बात अगर हम स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ वैश्विक ऊर्जा व्यापार की धुरी को समझने की करें तो,दुनियाँ के ऊर्जा मानचित्र में यदि किसी एक समुद्री मार्ग को सबसे अधिक रणनीतिक महत्व प्राप्त है तो वह स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ है। यह जलडमरूमध्य फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है और यही मार्ग खाड़ी देशों से निकलने वाले तेल और गैस को दुनिया के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचाता है।भौगोलिक दृष्टि से यह जलडमरूमध्य उत्तर में ईरान और दक्षिण में ओमान तथा संयुक्त अरब अमीरात के बीच स्थित है।इसकी चौड़ाई प्रवेश और निकास पर लगभग 50 किलोमीटर है जबकि सबसे संकरे हिस्से में यह लगभग 33 किलोमीटर रह जाती है। इसके बावजूद यह इतना गहरा है कि दुनिया के सबसे बड़े तेल टैंकर भी यहां से गुजर सकते हैं।हर महीने लगभग 3000 से अधिक जहाज इस मार्ग से गुजरते हैं और विश्व के लगभग 30 प्रतिशत तेल की आपूर्ति इसी रास्ते से होती है। यही कारण है कि इसे वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति का "चोकपॉइंट" कहा जाता है। यदि इस मार्ग में थोड़ी भी बाधा आती है तो तेल की कीमतें तुरंत प्रभावित हो जाती हैं।

साथियों बात अगर हम समुद्री हमले और वैश्विक चिंता को समझने की करें तो हाल के दिनों में इस समुद्री मार्ग में कई संदिग्ध घटनाएं सामने आई हैं। कुछ जहाजों पर अज्ञात प्रोजेक्टाइल से हमले की खबरें आईं, जबकि एक जहाज में आग लगने के बाद उसे खाली कराना पड़ा। इन घटनाओं ने अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार और ऊर्जा बाजारों को चिंतित कर दिया है।अमेरिकी सैन्य सूत्रों ने दावा किया है कि उन्होंने इस मार्ग में ईरान से जुड़े 16 माइन बिछाने वाले जहाजों को नष्ट कर दिया है। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन इससे यह स्पष्ट हो गया है कि यह क्षेत्र अब एकसंभावित सैन्य संघर्ष का केंद्र बन चुका है।समुद्री मार्गों पर इस तरह की अस्थिरता वैश्विक व्यापार के लिए गंभीर खतरा है क्योंकि तेल टैंकरों और मालवाहक जहाजों की सुरक्षा सीधे अंतरराष्ट्रीय बाजारों की स्थिरता से जुड़ी होती है।

साथियों बात अगर हम तेल की कीमतें और वैश्विक अर्थव्यवस्था को समझने की करें तो, ऊर्जा बाजार में अस्थिरता का सबसे बड़ा प्रभाव तेल की कीमतों पर पड़ता है। जब भी पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ता है तो वैश्विक बाजारों में तेल की कीमतें तेजी से ऊपर जाती हैं। हाल के दिनों में भी ऐसा ही देखने को मिला है।ईरान ने चेतावनी दी है कि यदि क्षेत्रीय संघर्ष जारी रहा और ऊर्जा मार्ग अस्थिर बने रहे तो कच्चे तेल की कीमत 200 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकती है। विशेष रूप से ईरान के सैन्य अधिकारियों का कहना है कि लगातार बमबारी और सैन्य गतिविधियों से क्षेत्रीय सुरक्षा कमजोर हो रही है और इसका असर वैश्विक ऊर्जा बाजारों पर पड़ना तय है।यदि तेल की कीमतें वास्तव में 200 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंचती हैं तो इसका असर केवल ऊर्जा बाजार तक सीमित नहीं रहेगा। इससे परिवहन, खाद्य उत्पादन, औद्योगिक लागत और वैश्विक व्यापार सभी प्रभावित होंगे। परिणामस्वरूप दुनिया भर में महंगाई बढ़ सकती है।

साथियों बात अगर हम क्या ईरान बंद कर सकता हैस्ट्रेट ऑफ होर्मुज़? इसको समझने की करें तो, यह प्रश्न आज वैश्विक रणनीतिक चर्चा का प्रमुख विषय बन चुका है कि क्या ईरान वास्तव में इस जलडमरूमध्य को बंद कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों के अनुसार किसी भी देश को अपनी तटरेखा से लगभग12 नॉटिकल मील तक समुद्री क्षेत्र पर नियंत्रण का अधिकार होता है। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ के सबसे संकरे हिस्से में यह मार्ग ईरान और ओमान के समुद्री क्षेत्र के भीतर आता है। इस कारण यहां से गुजरने वाले जहाजों को इन दोनों देशों के क्षेत्रीय जल से होकर गुजरना पड़ता है। हालांकि अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत उन्हें ट्रांजिट पैसेज का अधिकार प्राप्त होता है, जिसका अर्थ है कि वे इस मार्ग से गुजर सकते हैं।यदि ईरान इस मार्ग को बाधित करना चाहे तो वह समुद्र में माइंस बिछाकर, नौसैनिक गश्त बढ़ाकर या ड्रोन हमलों के जरिए जहाजों को निशाना बना सकता है। हालांकि ऐसा करने पर उसे अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया और सैन्य जवाबी कार्रवाई का भी सामना करना पड़ सकता है।

साथियों बात कर हम भारत पर संभावित प्रभाव को समझने की करें तो,यदि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ में गंभीर बाधा उत्पन्न होती है तो इसका सबसे बड़ा असर एशिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं भारत, चीन और जापान पर पड़ेगा। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरत का लगभग 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा आयात करता है और इसमें पश्चिम एशिया का महत्वपूर्ण योगदान है।यदि इस मार्ग से तेल की आपूर्ति बाधित होती है तो भारत को न केवल अधिक कीमत पर तेल खरीदना पड़ेगा बल्कि वैकल्पिक स्रोतों की तलाश भी करनी होगी। इससे भारत की ऊर्जा लागत बढ़ सकती है और महंगाई पर दबाव बढ़ सकता है।एलपीजी, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि का सीधा असर आम जनता की जेब पर पड़ेगा। परिवहन महंगा होगा, उद्योगों की लागत बढ़ेगी और इससे आर्थिक गतिविधियों पर भी प्रभाव पड़ सकता है।विशेषज्ञों की सलाह और भारत की रणनीतिक दिशाऊर्जा संकट की संभावनाओं को देखते हुए कई विशेषज्ञों और संस्थानों ने भारत सरकार को कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं।ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव ने सुझाव दिया है कि भारत को घरेलू आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अस्थायी रूप से पेट्रोल और डीजल के निर्यात पर रोक लगाने पर विचार करना चाहिए।इसके अलावा रूस जैसे देशों के साथ दीर्घकालिक तेल आपूर्ति समझौते करने की सलाह दी गई है ताकि वैश्विक संकट के समय भी भारत को स्थिर आपूर्ति मिल सके। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को अपनी ऊर्जा नीति में अधिक रणनीतिक स्वायत्तता अपनानी चाहिए और राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेने चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि ऊर्जा सुरक्षा और भू-राजनीति का नया युग शुरू मिडिल ईस्ट में चल रहा संकट केवल एकक्षेत्रीय संघर्ष नहीं है बल्कि यह वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था की नाजुकता को उजागर करता है। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ जैसे रणनीतिक मार्गों पर निर्भरता ने दुनिया को यह एहसास दिलाया है कि ऊर्जा सुरक्षा केवल आर्थिक मुद्दा नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।भारत जैसे तेजी से विकसित हो रहे देश के लिए यह चुनौती और भी बड़ी है क्योंकि उसकी ऊर्जा जरूरतें लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में सरकार द्वारा पहले से तैयारी करना, भंडारण बढ़ाना, वैकल्पिक स्रोत तलाशना और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक है।वर्तमान संकट यह भी संकेत देता है कि भविष्य की ऊर्जा नीति केवल आयात पर निर्भर नहीं रह सकती। नवीकरणीय ऊर्जा, सामरिक भंडारण और बहु-स्रोत आपूर्ति जैसे उपाय ही भारत को वैश्विक ऊर्जा अस्थिरता से सुरक्षित रख सकते हैं।मिडिल ईस्ट की भू-राजनीति चाहे जिस दिशा में जाए, एक बात स्पष्ट है ऊर्जा सुरक्षा आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थव्यवस्था की सबसे निर्णायक शक्ति बनी रहेगी। और इसी चुनौती के बीच भारत को अपनी रणनीतिक दूरदृष्टि और संतुलित कूटनीति के साथ आगे बढ़ना होगा।

कोहरा देख अवाक रह गए लोग

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। 12 मार्च गुरुवार को जब लोगों ने आंखें खोली तब उनका सामना घनघोर कोहरे से हुआ। गुरुवार की भोर से लगभग 4:00 बजें से घनघोर कोहरा छा गया जो सुबह नौ बजे तक छाया रहा जिसके बाद मौसम धीरे-धीरे साफ हो गया। एकाएक मौसम के इस बदले रूप से लोग अवाक हों गए। कोहरे की वजह दृश्यता शून्य हो गई थी। तापमान में कोई ज्यादा परिवर्तन तो महसूस नहीं हुआ लेकिन मौसम का यह बदला रूप जरूर लोगों के बीच में चर्चा का विषय रहा। इसके पहले कुछ दिनों तक धुंध छाई रही थी जिसकी वजह से फसलों पर माहो नामक कीटों का प्रकोप बढ़ गया था खासकर गेहूं की फसल प्रभावित हो रही थी। गुरुवार को अचानक इस पड़ रहे कोहरे का कोई दुष्परिणाम तो नजर नहीं आ रहा है। दृश्यता शून्य हो जाने की वजह से सड़कों पर जहां वाहन आदि रेंगते नजर आए वहीं लोग सावधानी से चलते नजर आए। मौसम के जानकारों का मानना है कि अब मौसम साफ हो जाएगा। धुंध छठ जाएगी। राम आशीष, छांगुर, सतीश, रामदरश, अलगू, आदि बुजुर्गों ने बताया कि इस मौसम में यह पहली बार ऐसा देखने को मिल रहा है। वहीं कुछ लोग इस कोहरे का कारण कुछ और बताते नजर आएं।

मातृशक्ति सम्मेलन में गूंजा महिला सशक्तिकरण का संदेश

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ, मुख्यालय मंडल गोरखपुर द्वारा मातृशक्ति सम्मेलन एवं महिलाओं का होली मिलन कार्यक्रम उत्साह, गरिमा और आत्मीय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में रेलवे के विभिन्न कार्यालयों से बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति रही और पूरे आयोजन में महिला जागरूकता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक एकता का संदेश प्रमुख रूप से सामने आया।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ श्रीमती रीता मिश्रा, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की माननीय उपाध्यक्ष श्रीमती चारु चौधरी, तथा वरिष्ठ शिक्षाविद एवं गंगोत्री देवी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की संरक्षिका श्रीमती रीना त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्रीमती रीना त्रिपाठी ने महिलाओं को शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक जागरूकता के विषय में विस्तार से संबोधित किया।

अपने वक्तव्य में रीना त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी समाज की प्रगति तभी संभव है जब महिलाओं को सम्मान, शिक्षा और अवसरों की समान भागीदारी मिले। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष चारु चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षित और जागरूक महिला ही परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता रूपल त्रिपाठी ने महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार के अन्याय या उत्पीड़न की स्थिति में महिलाएँ कानून का सहारा लेने में संकोच न करें। कार्यक्रम का संचालन रीता मिश्रा, सर्वेश सिंह और अनीता कश्यप ने किया। इस अवसर पर प्रीति, सुनीता, राजकुमारी देवी, सुकन्या, सविता, रश्मि गुरुंग, मीरा, सुधा रानी त्रिपाठी, शायरा बानो, अंजू, परमजीत कौर सहित बड़ी संख्या में महिलाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

आईना पोर्टल लॉन्च : 10,500 कवियों की कविताओं से बनेगा हिंदी का विश्व रिकॉर्ड संकलन

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। हिंदी साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में अंतरराष्ट्रीय काव्य प्रेमी मंच तंजानिया ने एक ऐतिहासिक पहल के रूप में 'आईना हेरिटेज वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रोजेक्ट के डिजिटल पोर्टल का आभाषी पटल पर विधिवत आधिकारिक लॉन्च किया गया। इस अवसर पर काव्य प्रेमी मंच की संस्थापिका एवं कार्यक्रम प्रमुख डॉ.ममता सैनी,ग्लोबल एम्बेसडर डॉ.दुर्गा सिंहा,अंतरराष्ट्रीय लेखक,पत्रकार ,साहित्यकार डॉ. शंभु पंवार,डॉ. राजीव खरे,डॉ.सरोज दुबे,प्रीतम कुमार झा, राजपाल यादव ने इस ऐतिहासिक पोर्टल को लॉच किया और आयोजन पर विचार व्यक्त किए।

यह विश्व का पहलाएआई इनेबल्ड हिंदी पोएट्री वेरिफिकेशन पब्लिशिंग और हेरिटेज प्लेटफॉर्म है, जिसके माध्यम से 10,500 कवियों की मौलिक हिंदी कविताओं का संकलन कर विश्व रिकॉर्ड स्थापित करना है।

इस महत्वाकांक्षी साहित्यिक परियोजना का संचालन अंतरराष्ट्रीय काव्य प्रेमी की संस्थापक एवं निदेशक डॉ. ममता सैनी हैं।डॉ.सैनी ने बताया इस परियोजना का उद्देश्य हिंदी कविता को वैश्विक मंच प्रदान करना तथा उसे डिजिटल साहित्यिक विरासत के रूप में सुरक्षित करना है। उल्लेखनीय है कि वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार और चार विश्व रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा चुके डॉ. शंभु पंवार को इस परियोजना का ग्लोबल एम्बेसडर नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर डॉ. पंवार ने कहा कि यह पहल हिंदी साहित्य के लिए ऐतिहासिक अवसर है, जिसमें देश-विदेश के कवि अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से विश्व रिकॉर्ड का हिस्सा बन सकते हैं।

परियोजना के अंतर्गत "जीवन के सात आयाम" विषय पर 10,500 कवियों की कविताएँ एकत्रित कर वर्ल्डस फर्स्ट हिंदी पोएट्री वर्ल्ड रिकॉर्ड एंथोलॉजी तैयार की जाएगी। चयनित कविताएँ आईना डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित होने के साथ ही स्थायी ग्लोबल डिजिटल हेरिटेज आर्काइव में भी सुरक्षित रहेगी।विश्व रिकॉर्ड पूर्ण होने के बाद सभी स्वीकृत प्रतिभागियों को

वर्ल्ड रिकॉर्ड पोएट्री एंथोलॉजी पार्टिसिपेशन

सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। इस पहल में भाग लेने के लिए पोर्टल प्रोसेसिंग शुल्क 100 रुपये निर्धारित किया गया है।आयोजकों के अनुसार यह मंच केवल प्रकाशन तक सीमित नहीं है, बल्कि हिंदी कविता को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने और साहित्यिक धरोहर के रूप में संरक्षित करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। डॉ. पंवार ने सभी कवियों, साहित्यकारों, और लेखकों से इस ऐतिहासिक साहित्यिक अभियान से जुड़ने का आह्वान किया है।

दिल्ली में बढ़ते साम्प्रदायिक उन्माद पर कठोर कार्रवाई की मांग, मुख्यमंत्री से मिलने का समय मांगा

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद इंद्रप्रस्थ (दिल्ली प्रांत) के प्रांत मंत्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ने दिल्ली में हाल ही में हुई उस दुखद घटना, जिसमें एक हिंदू युवक की निर्मम हत्या हुई, पर गहरी चिंता और आक्रोश व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की घटनाएँ न केवल राजधानी की कानून-व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं, बल्कि समाज में असुरक्षा की भावना भी उत्पन्न करती हैं। गुप्ता ने कहा कि राजधानी दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण महानगर में साम्प्रदायिक उन्माद और हिंसा को किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि आज देशभर में उत्तर प्रदेश के "योगी मॉडल" की चर्चा इसलिए हो रही है क्योंकि वहाँ प्रशासन ने अपराधियों और दंगाइयों के विरुद्ध कठोर और त्वरित कार्रवाई कर कानून के शासन को दृढ़ता से स्थापित किया है।

विश्व हिंदू परिषद का मानना है कि दिल्ली में भी अपराध और दंगाई मानसिकता के विरुद्ध शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाई जानी चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार के साम्प्रदायिक तनाव या हिंसा की पुनरावृत्ति न हो सके। गुप्ता ने कहा कि भारतीय परंपरा में नारी शक्ति को माँ दुर्गा और माँ काली के स्वरूप में देखा जाता है, जो अधर्म और अत्याचार का नाश करती हैं। दिल्ली की जनता को विश्वास है कि मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता के नेतृत्व में राजधानी में कानून का दृढ़ शासन स्थापित होगा और समाज को अस्थिर करने वाले तत्वों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई होगी। विश्व हिंदू परिषद के प्रांत मंत्री ने बताया कि इस विषय पर समाज की चिंताओं और सुझावों को साझा करने के लिए मुख्यमंत्री को एक औपचारिक पत्र भेजकर उनसे भेंट का समय भी मांगा गया है। परिषद का एक प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री से मिलकर दिल्ली की कानून-व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के विषय में चर्चा करना चाहता है। विश्व हिंदू परिषद ने आशा व्यक्त की है कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में दिल्ली को और अधिक सुरक्षित, शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण राजधानी बनाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जाएंगे।

जलियांवाला बाग से कैक्सटन हॉल तक : शहीद-ए-आजम ऊधम सिंह की अमर गाथा

-सुनील कुमार महला

शहीद-ए-आजम सरदार उधम सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन दीपस्तंभों में से एक हैं, जिनका नाम साहस और अटूट संकल्प का प्रतीक है। दूसरे शब्दों में कहें तो उधम सिंह (राम मोहम्मद सिंह आज़ाद) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारियों में से एक थे। उनके बचपन का नाम शेर सिंह था तथा उनका जन्म 26 दिसंबर 1899 को सुनाम,जिला संगरूर,पंजाब में हुआ था।उनके पिता का नाम सरदार टहल सिंह था, जो रेलवे ओवरसियर (चौकीदार) के रूप में कार्य करते थे तथा उनकी माता का नाम नारायण कौर था।पाठकों को बताता चलूं कि बचपन में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया था, कहते हैं कि उनका पालन-पोषण अमृतसर के एक अनाथालय में हुआ था। उपलब्ध जानकारी के अनुसार माता-पिता के साये के बिना, उन्हें और उनके बड़े भाई (मुक्ता सिंह) को अमृतसर के सेंट्रल खालसा अनाथालय में शरण लेनी पड़ी।यह भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अनाथालय में ही रहकर पूरी की और वहीं से 1918 में मैट्रिक की परीक्षा पास की।13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुए भीषण जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने उधमसिंह के जीवन की दिशा बदल दी। दरअसल, उस समय वे अमृतसर में ही थे, और कहा जाता है कि वे घायल लोगों को पानी पिला रहे थे। इस क्रूर घटना ने उनके मन पर बहुत ही गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने इस नरसंहार का बदला लेने का संकल्प लिया। वे इस घटना के लिए पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'ड्वायर को जिम्मेदार मानते थे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड पृष्ठभूमि:-

दरअसल, 1919 में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट अधिनियम-1919 (जिसे काला कानून भी कहा गया) पारित किया। इस कानून के तहत सरकार को यह अधिकार मिल गया था कि वह किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए गिरफ्तार कर सकती थी।इस अन्यायपूर्ण कानून का पूरे देश में विरोध हुआ। इसी विरोध के दौरान अमृतसर के लोकप्रिय नेताओं सैफुद्दीन किचलू और सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया गया और उनकी रिहाई की मांग और रॉलेट एक्ट(अधिनियम) के विरोध में 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा आयोजित की गई।

वैशाखी का दिन और विशाल भीड़:-

13 अप्रैल 1919 को वैशाखी का पर्व था। इसलिए लगभग 10,000 पुरुष, महिलाएँ और बच्चे जलियांवाला बाग में एकत्र हो गए थे। कई लोग राजनीतिक सभा के लिए आए थे, जबकि अनेक लोग केवल मेले के कारण वहाँ पहुँचे थे। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि उस समय जलियांवाला बाग कोई व्यवस्थित बगीचा नहीं था, बल्कि यह मकानों से घिरा एक बड़ा खाली मैदान था तथा वहाँ आने-जाने के लिए केवल एक संकरा प्रवेश मार्ग था और चारों ओर ऊँची दीवारें व मकान स्थित थे।जब इस विशाल सभा की सूचना ब्रिटिश अधिकारी रेजिनाल्ड डायर को मिली, तो वह लगभग 90 सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा। कहते हैं कि उसके साथ दो मशीनगनों से लैस बख्तरबंद गाड़ियाँ भी थीं, लेकिन बाग का रास्ता संकरा होने के कारण वे अंदर नहीं जा सकीं।

गोलाबारी और भीषण नरसंहार:-

जनरल डायर ने बिना किसी चेतावनी के सैनिकों को भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। सैनिकों ने लगभग 10 मिनट तक लगातार गोलीबारी की और लगभग 1650 राउंड गोलियाँ चलाईं।गोलीबारी तब तक जारी रही जब तक गोला-बारूद लगभग समाप्त नहीं हो गया। चूँकि, सैनिकों ने सभी रास्तों को घेर लिया था, इसलिए लोग वहाँ से भाग नहीं सके और सैकड़ों लोग वहीं गिर पड़े।अपनी जान बचाने के लिए कई लोग बाग में स्थित एक कुएँ में कूद गए। बाद में उस कुएँ से 100 से अधिक शव निकाले गए। आज यह स्थान 'शहीदी कुआँ' के नाम से प्रसिद्ध है और वहाँ स्मारक के रूप में सुरक्षित रखा गया है।

मृतकों की संख्या और अमानवीय दमन:-

जलियांवाला बाग हत्याकांड में मृतकों की संख्या को लेकर विभिन्न आँकड़े मिलते हैं।ब्रिटिश सरकारी अभिलेखों के अनुसार 379 लोग मारे गए और लगभग 200 घायल हुए।अमृतसर डिप्टी कमिश्नर कार्यालय की सूची में 484 शहीदों का उल्लेख मिलता है। वहीं पर जलियांवाला बाग की सूची में 388 शहीदों का उल्लेख है।भारतीय अनौपचारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और लगभग 2000 घायल हुए। ब्रिटिश अभिलेखों के अनुसार मृतकों में 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक छह सप्ताह का शिशु शामिल था। कहते हैं कि इस घटना के बाद पूरे अमृतसर में कर्फ्यू लगा दिया गया था और घायलों को अस्पताल ले जाने तक की अनुमति भी नहीं दी गई। परिणामस्वरूप, कई लोग रातभर तड़पते हुए दम तोड़ बैठे। नरसंहार के बाद अमृतसर में 'मार्शल लॉ' लागू कर दिया गया था और लोगों के आवागमन तथा संचार पर कड़ी पाबंदियाँ लगा दी गईं। वास्तव में, डायर ने शहर में कई कठोर आदेश लागू किए। इनमें सबसे कुख्यात था 'क्रॉलिंग ऑर्डर', जिसके तहत जिस गली में एक अंग्रेज महिला पर हमला हुआ था, वहाँ से गुजरने वाले भारतीयों को पेट के बल रेंगकर(क्रॉलिंग करते हुए) जाने के लिए मजबूर किया जाता था। इसके अतिरिक्त, कई स्थानों पर लोगों को सार्वजनिक रूप से कोड़े भी लगाए गए।

ऊधम सिंह का प्रतिशोध:-

जलियांवाला बाग की इस घटना ने ऊधम सिंह के मन में प्रतिशोध की तीव्र भावना उत्पन्न कर दी। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे कई वर्षों तक अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। दरअसल,उधम सिंह ने लगभग 21 साल तक धैर्य और संकल्प के साथ प्रतीक्षा की और अंततः अपने देशवासियों के लिए न्याय का प्रतीक बन गए। कहते हैं कि इस दौरान उन्होंने अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप जैसे देशों की यात्राएँ भी कीं और विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े रहे। सरल शब्दों में कहें तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए वे विभिन्न देशों (जैसे अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप) की यात्रा करते हुए 1934 में लंदन पहुँचे और वहां उन्होंने 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' नाम अपनाया, जो भारत की सांप्रदायिक एकता का प्रतीक था। सरदार उधमसिंह,भगतसिंह को वे अपना गुरू मानते थे। यहां पाठकों को बताता चलूं कि उधम सिंह, शहीद भगत सिंह से उम्र में बड़े थे, फिर भी वे उन्हें अपना 'गुरु' और मार्गदर्शक मानते थे।1927 में जब वे भगत सिंह के कहने पर वापस भारत आए, तो उनके पास भारी मात्रा में हथियार और प्रतिबंधित साहित्य मिला, जिसके कारण उन्हें 5 साल की जेल हुई।उनकी जेब में हमेशा भगत सिंह की एक तस्वीर रहती थी। इसके अलावा, उधमसिंह का गदर पार्टी(अमेरिका में सदस्य बनें) से सक्रिय जुड़ाव रहा।वे महान क्रांतिकारी अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) से बेहद प्रभावित थे और उनसे विदेश में मिले भी थे। उन्होंने भारत की आजादी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थन जुटाने का काम किया।बहुत कम लोग जानते हैं कि लंदन में रहते हुए अपनी पहचान छिपाने और पैसे कमाने के लिए उन्होंने हॉलीवुड की फिल्मों में 'एक्स्ट्रा' के तौर पर काम किया था।उन्होंने 'एलिफैंट ब्वाय' (1937) और 'द फोर फीदर्स' (1939) जैसी फिल्मों में छोटे रोल भी किए थे।

माइकल ओ'ड्वायर की हत्या:-

अंततः 13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में आयोजित एक सभा में उधमसिंह एक मोटी किताब के भीतर पिस्तौल छिपाकर पहुँचे। सभा के दौरान उन्होंने माइकल ओ'ड्वायर पर गोली चलाकर उसकी हत्या कर दी।इस प्रकार उन्होंने जलियांवाला बाग के शहीदों के प्रति लिया गया अपना संकल्प पूरा किया। हालांकि, इसके तुरंत बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।एक दिलचस्प तथ्य यह है कि कैक्सटन हॉल की घटना के बाद, उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की, बल्कि उन्होंने स्वेच्छा से गिरफ्तारी दी, क्योंकि वे चाहते थे कि पूरी दुनिया को पता चले कि भारतीय अपने अपमान और नरसंहार का बदला लेना जानते हैं।

मुकदमा और फाँसी:-

अदालत में उधमसिंह ने निर्भीक होकर कहा कि उन्होंने यह कार्य अपने देशवासियों पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए किया है। उनका प्रसिद्ध कथन था-' मैंने यह इसलिए किया, क्योंकि वह इसके योग्य था। वह मेरे लोगों की भावनाओं को कुचलना चाहता था, इसलिए मैंने उसे कुचल दिया।' मुकदमे के बाद 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेंटनविले जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई। यहां पाठकों को बताता चलूं कि लंदन की पेंटनविले जेल में कैद के दौरान, उधम सिंह ने 42 दिनों तक भूख हड़ताल की थी। ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें जबरन खाना खिलाने की कोशिश की, लेकिन उनके हौसले को नहीं तोड़ सके। वे अंत तक अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। बाद में 1974 में उनकी अस्थियाँ भारत लाई गईं और उन्हें देश के महान शहीदों में सम्मानित स्थान दिया गया। गौरतलब है कि उनके अवशेषों(अस्थियाँ) के कुछ हिस्से अमृतसर के जलियांवाला बाग में भी रखे गए हैं।

अंत में निष्कर्षतः यही कहूंगा कि, ऊधम सिंह का जीवन अदम्य साहस, देशभक्ति और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का महान उदाहरण है। जलियांवाला बाग जैसी भीषण घटना ने उनके मन में स्वतंत्रता और न्याय के लिए प्रबल संकल्प उत्पन्न किया, जिसे उन्होंने वर्षों बाद पूरा किया। उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्याचार के विरुद्ध प्रतिरोध की अमर गाथा बन गया। आज भी ऊधम सिंह का नाम देशभक्ति, त्याग और शहीदों के सम्मान के प्रतीक के रूप में श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। ऐसे महान क्रांतिकारी के जज्बे और उनकी शहादत को शत-शत नमन, विनम्र श्रद्धांजलि।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

फॉलोअर्स की भूख और रिश्तों की नीलामी

- डॉ. सत्यवान सौरभ

डिजिटल युग ने अभिव्यक्ति के नए दरवाजे खोले हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को अपनी बात दुनिया तक पहुँचाने का अवसर दिया है। पहले जहां सूचना और मनोरंजन के साधन सीमित थे, वहीं आज कोई भी व्यक्ति अपने मोबाइल फोन के जरिए वीडियो बना सकता है, ब्लॉग लिख सकता है और लाखों लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकता है। यह बदलाव लोकतांत्रिक भी है और प्रेरणादायक भी। लेकिन हर बदलाव के साथ कुछ नई चुनौतियाँ भी जन्म लेती हैं।

आज सोशल मीडिया की दुनिया में लोकप्रियता की एक नई परिभाषा बन चुकी है—फॉलोअर्स, लाइक्स, शेयर और व्यूज़। जितने ज्यादा ये आंकड़े होते हैं, उतना ही किसी व्यक्ति को सफल माना जाता है। इसी होड़ ने कई कंटेंट क्रिएटर्स को ऐसी राह पर ला खड़ा किया है, जहां निजी जीवन की मर्यादाएं भी कंटेंट का हिस्सा बनती जा रही हैं।

बीते कुछ वर्षों में एक नया ट्रेंड तेजी से उभरा है—पारिवारिक झगड़ों और निजी विवादों को कैमरे के सामने लाकर सोशल मीडिया पर साझा करना। पति-पत्नी के विवाद, भाई-बहन के मतभेद, सास-बहू की तकरार या परिवार के अंदर की छोटी-छोटी बहसें—जो पहले घर की चारदीवारी में सुलझा ली जाती थीं—अब वीडियो और पोस्ट के रूप में लाखों दर्शकों के सामने परोसी जा रही हैं।

कई यूट्यूबर्स और ब्लॉगर इसे "रियल लाइफ कंटेंट" का नाम देते हैं। उनका तर्क होता है कि दर्शक वास्तविकता देखना चाहते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या हर वास्तविक घटना को सार्वजनिक करना जरूरी है? क्या निजी रिश्तों को दर्शकों की जिज्ञासा के लिए खोल देना उचित है?

असल में सोशल मीडिया का एल्गोरिथ्म भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। जिस कंटेंट में विवाद, भावनात्मक प्रतिक्रिया या सनसनी होती है, वह तेजी से वायरल होता है। लोग ऐसे वीडियो पर ज्यादा कमेंट करते हैं, अपनी राय देते हैं और कभी-कभी पक्ष या विपक्ष में बहस भी करते हैं। यही कारण है कि कुछ क्रिएटर्स जानबूझकर ऐसे विषय चुनते हैं जो लोगों की भावनाओं को भड़का सकें।

दुर्भाग्य की बात यह है कि कई बार ये झगड़े वास्तविक होते हैं और परिवार के सदस्यों की निजता दांव पर लग जाती है। एक छोटी सी तकरार को कैमरे के सामने लाकर बड़ा मुद्दा बना दिया जाता है। इससे न केवल रिश्तों की गरिमा प्रभावित होती है, बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों—विशेषकर बच्चों—पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ सकता है।

कुछ मामलों में तो यह भी देखने में आया है कि विवादों को जानबूझकर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है या फिर पूरी तरह से स्क्रिप्टेड होता है। यानी झगड़ा असली नहीं होता, लेकिन उसे असली दिखाने की कोशिश की जाती है ताकि दर्शकों का ध्यान खींचा जा सके। यह स्थिति मनोरंजन और वास्तविकता के बीच की रेखा को धुंधला कर देती है।

सोशल मीडिया के इस दौर में "वायरल" होना ही सफलता का पर्याय बन गया है। जब किसी वीडियो को लाखों व्यूज़ मिलते हैं और हजारों नए फॉलोअर्स जुड़ते हैं, तो क्रिएटर को लगता है कि उसने सही रास्ता चुना है। लेकिन यह लोकप्रियता अक्सर क्षणिक होती है। जिस विवाद ने एक दिन दर्शकों का ध्यान खींचा, वही अगले दिन किसी और नए विवाद से दब जाता है।

इस प्रवृत्ति का एक सामाजिक पहलू भी है। जब दर्शक बार-बार ऐसे कंटेंट देखते हैं, तो धीरे-धीरे उन्हें यह सामान्य लगने लगता है कि निजी रिश्तों को सार्वजनिक मंच पर लाकर चर्चा का विषय बनाया जाए। इससे समाज में गोपनीयता और मर्यादा की भावना कमजोर पड़ सकती है।

हमारे समाज में परिवार को हमेशा एक मजबूत संस्था माना गया है। परिवार केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा, विश्वास और आपसी समझ का आधार भी है। जब परिवार के अंदर की समस्याओं को सार्वजनिक तमाशा बना दिया जाता है, तो यह उस भरोसे को कमजोर करता है जो रिश्तों की नींव होता है।

इसके अलावा, सोशल मीडिया पर आने वाले दर्शकों में बड़ी संख्या युवा और किशोरों की भी होती है। वे जो कुछ देखते हैं, उससे प्रभावित होते हैं। अगर वे बार-बार यह देखेंगे कि लोकप्रियता पाने के लिए निजी विवादों को सार्वजनिक करना सामान्य बात है, तो उनके मन में भी यही धारणा बन सकती है कि जीवन में सफलता के लिए किसी भी हद तक जाना स्वीकार्य है।

यह भी सच है कि सभी कंटेंट क्रिएटर्स ऐसे नहीं होते। बहुत से यूट्यूबर्स, ब्लॉगर और डिजिटल क्रिएटर्स ऐसे भी हैं जो ज्ञानवर्धक, रचनात्मक और सकारात्मक सामग्री प्रस्तुत करते हैं। शिक्षा, विज्ञान, कला, संस्कृति, यात्रा और सामाजिक मुद्दों पर काम करने वाले अनेक लोग सोशल मीडिया को एक सकारात्मक मंच के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। उनके प्रयास यह साबित करते हैं कि लोकप्रियता पाने के लिए विवाद और ड्रामा ही एकमात्र रास्ता नहीं है।

असल सवाल जिम्मेदारी का है। जब किसी के पास हजारों या लाखों लोगों तक पहुंचने की ताकत होती है, तो उसके साथ एक सामाजिक जिम्मेदारी भी जुड़ जाती है। कंटेंट क्रिएटर्स को यह समझना चाहिए कि उनकी सामग्री केवल मनोरंजन ही नहीं करती, बल्कि लोगों की सोच और दृष्टिकोण को भी प्रभावित करती है।

दर्शकों की भी इसमें भूमिका कम नहीं है। आखिर वही तय करते हैं कि किस प्रकार का कंटेंट ज्यादा देखा जाएगा और किसे नजरअंदाज किया जाएगा। अगर दर्शक केवल सनसनी और विवाद वाले वीडियो को ही बढ़ावा देंगे, तो स्वाभाविक है कि ऐसे कंटेंट की संख्या बढ़ती जाएगी। लेकिन अगर वे रचनात्मक और सकारात्मक सामग्री को अधिक समर्थन देंगे, तो डिजिटल दुनिया का माहौल भी बदल सकता है।

आज जरूरत इस बात की है कि सोशल मीडिया के उपयोग में संतुलन और समझदारी लाई जाए। निजी जीवन की सीमाएं तय की जाएं और यह समझा जाए कि हर घटना को सार्वजनिक करना आवश्यक नहीं होता। लोकप्रियता और फॉलोअर्स का महत्व अपनी जगह है, लेकिन रिश्तों की गरिमा और व्यक्तिगत सम्मान उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

अंततः यह याद रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया एक साधन है, लक्ष्य नहीं। इसका उपयोग ज्ञान, संवाद और सकारात्मक बदलाव के लिए किया जा सकता है। लेकिन जब यह केवल लोकप्रियता की अंधी दौड़ में बदल जाता है, तो इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगते हैं।

फॉलोअर्स और व्यूज़ की यह भूख अगर इसी तरह बढ़ती रही, तो कहीं ऐसा न हो कि एक दिन लोग लोकप्रिय तो हो जाएं, लेकिन अपने ही रिश्तों और मूल्यों से दूर हो जाएं। इसलिए समय रहते यह समझना जरूरी है कि सच्ची सफलता वही है, जो सम्मान और संवेदनशीलता के साथ हासिल की जाए—न कि रिश्तों की नीलामी करके।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

Bhupender Saraswat Sarthi
18m ·

🕉 श्री संजय बाठला जी, प्र० संपादक *दैनिक परिवहन विशेष* के सम्मान पर हृदयतल से मंगलकामनाएं...❣️🙏
-
✍️भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी', ब्यूरो का० "सारस्वत संजीवनी", (वार्षिक पत्रिका).

रेल मंत्री का CM को लेटर, ओडिशा को असम और तेलंगाना से जोड़ने के लिए नई अमृत भारत ट्रेन

भुवनेश्वर-धनबाद और पुरी-पटना दो स्पेशल ट्रेन सर्विस रेगुलर

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: ओडिशा में रेल कनेक्टिविटी को सबसे ज़्यादा अहमियत देते हुए, केंद्र सरकार ने ओडिशा को असम और तेलंगाना से जोड़ने के लिए एक नई अमृत भारत ट्रेन सर्विस शुरू करने की मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही, दो स्पेशल ट्रेन सर्विस को रेगुलर ट्रेन सर्विस में बदलने की भी मंजूरी दी गई है।

इससे पहले, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इस मामले पर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से बात की थी और उनसे ओडिशा के लोगों के लिए और ट्रेन सर्विस देने की रिक्वेस्ट की थी। रेल मंत्री श्री वैष्णव ने इस बारे में मुख्यमंत्री को एक लेटर के ज़रिए जानकारी दी है।

गौरतलब है कि असम के कामाख्या और तेलंगाना के चरलापाली (सिकंदराबाद) के बीच एक नई अमृत भारत ट्रेन चलेगी। यह ओडिशा में बालासोर, भद्रक, जाजपुर क्योंझर रोड, कटक, भुवनेश्वर, खोरधा रोड, बालूगांव और बरहमपुर से होकर गुज़रेगी।

खास बात यह है कि 18403/18404 भुवनेश्वर-धनबाद स्पेशल ट्रेन धनबाद पहुंचने से पहले कटक, ढेंकनाल, तालचेर रोड, अंगुल, रेढ़ाखोल, संबलपुर शाबाद, झारसुगुड़ा और राउरकेला स्टेशनों से गुज़रेगी। इस ट्रेन को अब रेगुलर कर दिया गया है।

इसी तरह, 08439/08440 पुरी-पटना स्पेशल ट्रेन पटना पहुंचने से पहले खोरधा रोड, भुवनेश्वर, कटक, जाजपुर क्योंझर रोड, भद्रक और बालासोर स्टेशनों से गुज़रेगी। इसे भी रेगुलर कर दिया गया है।

ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री माझी ने राज्य में रेल कनेक्टिविटी को काफी बढ़ाने के लिए इस ट्रेन सर्विस को मंजूरी देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय रेल मंत्री श्री बैष्णब को धन्यवाद दिया।

पैंथर डिवीज़न के हेडे ऑडिटोरियम में आर्मी की पत्नियों के लिए एक खास स्किलिंग और इंटरैक्टिव सेशन रखा गया

अमृतसर : 12 मार्च (साहिल बेरी)

पैंथर डिवीज़न के हेडे ऑडिटोरियम में आर्मी की पत्नियों के लिए एक खास स्किलिंग और इंटरैक्टिव सेशन रखा गया। इसमें 250 से ज़्यादा ऑफिसर्स और सैनिकों की पत्नियाँ एक साथ आईं। यह सेशन ग्रूमिंग, स्टाइल और सेल्फ-कॉन्फिडेंस पर आधारित एक मज़ेदार दोपहर के लिए था।

इस प्रोग्राम को फैमिली वेलफेयर ऑर्गनाइज़ेशन पैंथर डिवीज़न की चेयरपर्सन श्रीमती श्रद्धा कार्तिक ने क्यूरेट किया था। इसका मकसद आर्मी परिवारों को सीखने के अच्छे मौके देना और क्रिएटिव एक्सप्रेशन को बढ़ावा देना था।

इस सेशन में अमृतसर की तीन जानी-मानी महिला एंटरप्रेन्योर्स के साथ दिलचस्प बातचीत हुई, जिन्होंने प्रैक्टिकल बातें और डेमोंस्ट्रेशन शेयर किए।

स्टूडियो बाय हिमानी अरोड़ा की फैशन डिज़ाइनर और क्रिएटिव डायरेक्टर श्रीमती हिमानी अरोड़ा ने स्टाइलिंग से जुड़ी कीमती बातें और वॉर्डरोब टिप्स शेयर किए। उन्होंने बताया कि कैसे कॉन्फिडेंस, पर्सनल स्टाइल और इंडियन टेक्सटाइल मिलकर एलिगेंट और वर्सेटाइल लुक दे सकते हैं।

कलर लाउंज की फाउंडर श्रीमती सुरुचि सावलानी ने एक इंटरैक्टिव मेकअप मास्टरक्लास किया, जिसमें आसान ग्रूमिंग टेक्नीक और रोज़ाना इस्तेमाल होने वाले ब्यूटी टिप्स दिखाए गए।

खुराना ज्वेलरी हाउस की डायरेक्टर श्रीमती दृष्टि खुराना ने ज्वेलरी स्टाइलिंग पर गाइडेंस दी और बताया कि कैसे एक्सेसरीज़ का सही चुनाव किसी भी आउटफिट को बेहतर बना सकता है।

आर्मी वाइव्स के जोश से भरे पार्टिसिपेशन ने सेशन को लाइवली और इंटरैक्टिव बना दिया, जिसमें पार्टिसिपेंट्स ने चर्चा में हिस्सा लिया और फैशन, ग्रूमिंग और पर्सनल स्टाइल पर कई सवाल पूछे। इस इवेंट में सीखने, भाईचारे और एम्पावरमेंट की भावना दिखी, जिसे आर्मी वाइव्स वेलफेयर एसोसिएशन आर्मी कम्युनिटी में बढ़ावा देता रहता है।

KT:Kalã ने खालसा कॉलेज, अमृतसर की आर्ट एग्ज़िबिशन होस्ट की

अमृतसर 12 मार्च (साहिल बेरी)

इलाके में आर्ट और कल्चर को बढ़ावा देने की अपनी सच्ची कोशिशों को जारी रखते हुए, इस बार KT:Kalã म्यूज़ियम ने खालसा कॉलेज अमृतसर को अपनी जगह दी, जहाँ वे P. G. डिपार्टमेंट ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स खालसा कॉलेज अमृतसर के स्टूडेंट्स की ग्रुप आर्ट एग्ज़िबिशन ब्रश एंड बियॉन्ड ऑर्गनाइज़ कर सकते हैं।

एग्ज़िबिशन का उद्घाटन 11 मार्च 2026 को खालसा कॉलेज अमृतसर के प्रिंसिपल डॉ. आत्म सिंह रंधावा ने पारंपरिक तरीके से दीया जलाकर किया। वहाँ मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए, चीफ़ गेस्ट ने इतनी शानदार और मतलब वाली एग्ज़िबिशन लगाने के लिए फ़ैकल्टी और स्टूडेंट्स को बधाई दी। चीफ़ गेस्ट ने KT:Kalã म्यूज़ियम में कलाकारों को मुफ़्त में एग्ज़िबिशन की जगह देकर इलाके में आर्ट और कल्चर को बढ़ावा देने के लिए KAUSA ट्रस्ट की लगातार कोशिशों की बहुत तारीफ़ की।

लैंप-लाइटिंग सेरेमनी से पहले, KAUSA ट्रस्ट के सेक्रेटरी राजेश रैना ने चीफ गेस्ट, खालसा कॉलेज के HOD, फैकल्टी मेंबर्स और खालसा कॉलेज के स्टूडेंट्स का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने आर्ट और कल्चर को बढ़ावा देने के लिए KT:Kalã की चल रही कोशिशों के बारे में बताया और क्रिएटिव टैलेंट को बढ़ावा देने के लिए ऑर्गनाइज़ेशन के कमिटमेंट को दोहराया।

टीचर्स ने चीफ गेस्ट को तारीफ़ के तौर पर गुलदस्ते और एक खूबसूरत पेंटिंग दी। इस इवेंट में जसप्रीत कौर HOD फाइन आर्ट्स, डॉ. मेहताब कौर, हरमनदीप कौर और जगदीप कौर भी मौजूद थीं।

डायरेक्टर ब्रजेश जॉली ने बताया कि 13 मार्च 2026 तक एग्ज़िबिशन में लगभग 70 आर्टवर्क दिखाए गए हैं।

खालसा कॉलेज अमृतसर के 20 से ज़्यादा स्टूडेंट्स ने उद्घाटन समारोह में हिस्सा लिया। मौजूद जाने-माने लोगों में कुलवंत सिंह गिल, नरिंदर सिंह, धरमिंदर शर्मा, डॉ. राजबीर सिंह, डॉ. दलजीत सिंह, डॉ. सविता, भारती मल्होत्रा, राजेश मल्होत्रा, रविंदर ढिल्लों, गुरशरण कौर, निशा घई, बेला अग्रवाल, अमन गिल और दूसरे जाने-माने मेहमान शामिल थे।

प्रोग्राम बहुत ही पॉजिटिव और हौसला बढ़ाने वाले नोट पर खत्म हुआ, जिससे युवा कलाकारों को अपनी क्रिएटिव जर्नी जारी रखने की प्रेरणा मिली।

अमनदीप मेडसिटी अमृतसर ने उजाला सिग्नस के साथ मिलकर विश्व गुर्दा दिवस मनाया

अमृतसर 12 मार्च (साहिल बेरी)

अमनदीप मेडसिटी अमृतसर ने उजाला सिग्नस के साथ मिलकर विश्व गुर्दा दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें मरीजों और स्थानीय लोगों को गुर्दे के स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित किया गया। इस कार्यक्रम में नेफ्रोलॉजी के मरीज, स्थानीय लोग और गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए, जिन्हें गुर्दे के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जानने के लिए आमंत्रित किया गया था।

वरिष्ठ सलाहकार नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. मनमीत सिंह जंवर ने उपस्थित लोगों को गुर्दे के स्वास्थ्य की देखभाल के तरीके बताए और शीघ्र निदान और रोकथाम के महत्व पर जोर दिया। डॉ. मनमीत सिंह जंवर ने कहा, _स्वस्थ जीवनशैली अपनाना, पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित जांच करवाना गुर्दों को स्वस्थ रखने में बहुत सहायक हो सकता है।_

सलाहकार यूरोलॉजिस्ट डॉ. दक्ष महाजन ने कहा, _₹गुर्दे की बीमारियों के प्रबंधन में शीघ्र निदान और समय पर उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हम सभी से गुर्दे के स्वास्थ्य के लिए सक्रिय कदम उठाने का आग्रह करते हैं।

अमनदीप मेडसिटी की निदेशक डॉ. अमनदीप कौर ने कहा, _₹हम अपने मरीजों को गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान करने और गुर्दे के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विश्व गुर्दा दिवस की यह पहल लोगों को अपने स्वास्थ्य पर नियंत्रण रखने के लिए ज्ञान और संसाधनों से सशक्त बनाने की दिशा में एक कदम है।₹_

अमनदीप ग्रुप एक प्रमुख स्वास्थ्य सेवा नेटवर्क के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें 750 से अधिक बिस्तर और 170 से अधिक विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक प्रतिष्ठित टीम छह रणनीतिक स्थानों पर कार्यरत है - अमृतसर में दो अत्याधुनिक अस्पताल और पठानकोट, फिरोजपुर, श्रीनगर और तरनतारन में एक-एक अस्पताल। सेवा की समृद्ध विरासत के साथ, समूह ने सफलतापूर्वक 25 लाख से अधिक रोगियों के जीवन को बदला है, और क्षेत्र में सुलभ, किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के मानकों को लगातार ऊंचा उठाया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023